खंड: XIII अंक: 5 व 6
मई - जून, 2001

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

चैतन्य लहरी

किरन्तीमङ्गेभ्य किरणनिकुरूम्वामृतरसं
हृदि त्वामाधत्ते हिपकरशिलामूर्तिमिवं यः।
स सपीरां दर्प शमयतिं शकुन्ताधिप इवं
ज्वटरप्लुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधाऽऽध्या (सा) रसिरयां

हे देवी! जो साधक हृदय में आपका ध्यान करता है और आपके साकार रूप से प्रस्फुट होती हुई चैतन्य किरणों की ज्योति को चन्द्रकान्त मणि की किरणों सम प्रसारित करता है। साक्षात् गरुड़ की तरह से वह अपने कटाक्ष मात्र से सर्पों की क्रूरता एवं अहं का शमन कर सकता है। अमृत प्रवाहिनी नाड़ी की तरह से उसके एक कटाक्ष से भयानक रोग और ज्वरपीड़ा ठीक हो सकते हैं।

इस अंक में

1.	सम्पादकीय	1
2.	श्री माताजी की सेवा में – श्री गणेश	2
3.	श्री आदिशक्ति पूजा (काना जौंहरी) (2.7.2000)	5
4.	नवरात्रि पूजा (कबैला) – (8.10.2000)	15
5.	दिवाली पूजा (लॉस एंजलिस) (29.10.2000)	30
6.	तिहाड़ जेल में सहज प्रकाश	46

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162–ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक : अमरनाथ प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली–15,
फोन न. : 5447291, 5170197

सम्पादकीय

इक्कीस अप्रैल दो हजार के दिन दुबई सहज सामूहिकता पर श्रीमाताजी की आशीष वर्षा हुई। यह देखकर श्रीमाताजी बहुत प्रसन्न थी कि किस प्रकार उन्होंने अपने घर से दूर घर बनाने में आने वाली बाधाओं को दूर किया है। उन्होंने कहा, "जिस प्रकार आप लोग सामूहिक हो गए हो उसी प्रकार आप बहुत से घर भी बना लोगे क्योंकि आपने हृदय से सहजयोग को पहचाना है। सागर सम गहनता आपने प्राप्त कर ली है। आप रत्नों की तरह से चमकते हुए प्रतीत होते हैं। सहजयोग को समझने के लिए आपका हृदय विशाल होना आवश्यक है। आपकी गहनता को देखकर अन्य लोग भी सहजयोग में आएंगे। आपकी गहनता पूरे वातावरण में व्याप्त हो जाएगी। ये अन्तिम निर्णय का समय है या तो आप बच जाएंगें या नष्ट हो जायेंगें।

पूर्णिमा की चाँदनी रात को दुबई के समीप नौका–विहार करते हुए श्रीमाताजी के मुखारबिन्द से इन बहुमूल्य विवेकमणियों की वर्षा हुई। सभी सहजयोगी मधुर भजन गा रहे थे। अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में देवी ने अपने सभी बच्चों पर आशीष वर्षा की।

हृदय से जब हम देवी की पूजा करते हैं तो वे प्रसन्न होती हैं। थोथे कर्मकाण्ड या बौद्धिक योजनाएं उन्हें प्रभावित नहीं करती। जब वे हमारे हृदय में होती हैं तो हमारा पथ प्रदर्शन करती हैं, बाधाएं दूर करती हैं तथा हमारे अन्दर आनन्द का संचार करती है। हमें महसूस ही नहीं होता कि हम कुछ कर रहे हैं फिर भी सभी कुछ स्वत, इस प्रकार कार्यान्वित होता हैं जिसकी हम आशा भी नहीं करते। ऐसी–ऐसी घटनाएं घटती है जिनके विषय में हमने कभी सोचा भी न था। ऐसी होती है दैवी कृपा, ऐसे होते हैं उनके चमत्कार, ऐसी होती है सहज सुगन्ध।

जिसने एक बार उनकी कृपा का स्वाद चख लिया है केवल एक बार, सदा–सर्वदा के लिए वह उनके आनन्द में शराबोर हो जाता है। वे प्रेम की सागर हैं।

जय श्री माताजी

श्री माताजी के कार मार्ग को रोशन करते हुए श्री गणेश

दिवाली पूजा–7 नवंबर 1999

परमेश्वरी माँ की कृपा से हमें यूनान में दिवाली पूजा करने का अवसर प्राप्त हुआ। पाँच वर्षों के लम्बे समय के पश्चात् श्रीमाताजी यूनान आए। ऐथंज (Athens) में उनका स्वागत करने के लिए हम सभी सहजयोगी उत्सुक थे।

श्रीमाताजी ने डेल्फी में इस पूजा की व्यवस्था करने की आज्ञा हमें प्रदान की क्योंकि विश्व के ठीक मध्य (नाभि) में स्थित होने के कारण यह स्थान महत्वपूर्ण है। यूनान देश देव–लोक है अर्थात यह श्री विष्णु–लोक है। इस प्रकार यह अवसर, श्री लक्ष्मी जी की पूजा उन्ही के लोक में करने का था।

ऐथन से साढ़े–तीन घण्टे के कार द्वारा सफर की दूरी पर एक पहाड़ के ऊपर डेल्फी स्थित है। श्रीमाताजी ने अपनी पहली डेल्फी यात्रा के मध्य यहाँ स्वयंभु श्री गणेश को खोजा था। डेल्फी शब्द का उद्भव डोल्फिन (मत्सय) से है जो कि श्री विष्णु जी की वाहन है। पूजा–दिवस से दो सप्ताह पूर्व हमने स्थल पर कैम्प का आयोजन करना आरम्भ किया। उसी दिन आकाश में हमें श्रीगणेश के रूप के दर्शन हुए और हमें लगा कि वे इस मंगल कार्य के शुभारम्भ पर चैतन्य वर्षा कर रहे हैं। इससे हमें अथाह आनन्द एवं शक्ति प्राप्त हुई। पुनः पूजा से एक सप्ताह पूर्व सूर्य के चहुँ ओर बादलों के दो विशाल वृत्त पूरा दिन हमें दिखाई दिए। इस घटना ने हमें आभास करवाया कि कोई अलौलिक घटना घटित होने वाली है। जब मैंने इसके विषय में श्री माताजी को बताया तो उन्होंने बताया कि यह मेरे आने की उद्घोषणा थी। यद्यपि यूनान में यह पहली अन्तर्राष्ट्रीय पूजा की जा रही थी और वहाँ की सामूहिकता भी बहुत छोटी थी फिर भी श्री माताजी की कृपा से सभी कुछ बिना किसी विशेष प्रयत्न के अत्यन्त सुन्दर ढंग से कार्यान्वित हुआ।

श्रीमाताजी बृहस्पतिवार को ऐथंज पहुँची और उसी दिन हम डेल्फी आए। पहाड़ की चोटी पर स्थित एक बँगला हमने श्रीमाताजी के रहने के लिए आरक्षित करवा लिया था। यद्यपि यह बंगला काफी पुराना था फिर भी पूरी सामूहिकता ने कठोर परिश्रम करके इसे सजाया ताकि श्रीमाताजी को यहाँ रहकर अच्छा लगे। वहाँ से बहुत सुन्दर दृश्य दिखाई देता था। समुद्र पर्वत तथा जैतून के पेड़ों के

हरे–भरे खेत वहाँ से दिखाई देते थे। श्री माताजी के साथ जब हम वहाँ पहुँचे तो पूरा स्थान इस प्रकार से शान्त एवं ध्यानमग्न था मानो हम किसी बिल्कुल भिन्न संसार में आ गए हों।

शुक्रवार और शनिवार को दक्षिणी अफ्रीका, फ्रांस, यूनान और स्विटज़रलैण्ड के सहजियों द्वारा आयोजित अत्यन्त हृदयस्पर्शी संगीत कार्यक्रम हुआ। अपनी सहजता तथा अबोधिता द्वारा दक्षिणी अफ्रीका के सहजयोगियों ने सभी के हृदय में आनन्द एवं माधुर्य का संचार कर दिया। उनका नृत्य विशेष रूप से इतना आकर्षक था कि पूजा के पश्चात् सभी सहजयोगियों ने उनकी शैली की नकल करने का प्रयत्न किया। जैतून के पेड़ के पत्तों के आकार में चाँदी के मुकुट भेंट द्वारा श्रीमाताजी का स्वागत किया गया। जैतून का पेड़ शान्ति का प्रतीक है। एक छोटा समुद्री जहाज तथा एक बुर्का भी श्रीमाताजी को भेंट किया गया। हम श्रीमाताजी का स्वागत पारम्परिक शैली में करना चाहते थे क्योंकि हमें लगा कि साक्षात् श्रीमाताजी के रूप में श्री एथेना यहाँ से पूरे विश्व को ज्योतिर्मय करने लगी हैं और इस महान विजय के पश्चात् घर वापिसी पर उनका स्वागत करने का यह अवसर हमें प्राप्त हुआ है। सारे कार्यक्रम तथा पूजा बहुत अच्छी तरह से सम्पन्न हुए। विश्वभर के लगभग सात सौ योगी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। श्रीमाताजी ने श्री एथेना, देवलोक तथा भारत तथा यूनान के पारम्परिक सम्बन्धों के विषय में बातचीत की। एक अत्यन्त रूचिकर बात जो उन्होंने बताई वह यह थी कि श्री एथेना श्री लक्ष्मी जी की माँ है।

पूजा के पश्चात् बड़े–बड़े चमत्कार घटित हुए। इतनी मूसलाधार वर्षा हुई कि सांख्यिकी विदों (Statisticians) ने हमें बताया कि दस वर्ष में पहली बार इतनी मूसलाधार वर्षा हुई है। सोमवार प्रातः हमने वहां से निकलना चाहा परन्तु बारिश इतनी तेज थी कि हम प्रातः के स्थान पर रात को ही निकल पाए। तब भी वर्षा हो रही थी। डेल्फी गाँव से निकलते ही पर्वतों की ओर से आते हुए दो किरण पुँज (Beams of Light) हमें दिखाई दिए। एक किरण पुँज श्रीमाताजी की कार के सम्मुख चमका और दूसरा आकाश में। वास्तव में इसी पर्वत पर स्वयंभु श्री गणेश का और अपोलो का, जो कि श्री राम हैं, मन्दिर है। ये दोनों किरण पुँज वहीं से निकले होंगे। जब–जब भी मार्ग में हम किसी मोड़ पर आए तो उस किरण पुँज का प्रकाश तब तक रहा जब तक वह मोड़ हमने पार नहीं कर लिया। हर मोड़ पर अत्यन्त मौन पूर्वक इस दिव्य प्रकाश ने हमारा पथ–प्रदर्शन किया। पूरा दृश्य इस प्रकार हो गया मानो हम देव भूमि से गुजर रहे हों। श्री माताजी ने हमें बताया कि वह प्रकाश 108 बार हमारा मार्ग प्रशस्त करेगा और जब हम मुख्यमार्ग

पर पहुँच जाएंगे तो यह समाप्त हो जाएगा। जिस प्रकार श्री माता जी ने बताया था बिल्कुल वैसे ही हमने दिव्य प्रकाश का दृश्य देखा। ज्यों ही हम मुख्य मार्ग पर पहुँचे सारा वातारण परिवर्तित हो गया। सभी कुछ सूखा था और प्रकाश की चमक कहीं न थी। श्री माताजी ने बड़े प्रेम से हमें बताया कि दिवाली पर हमने जो पटाखे चलाए थे उसके आशीर्वाद के रूप में ये प्रकाश पुंज हमें दिखाई दिए। ऐथंज आकर हमने एक जन कार्यक्रम किया। अगले दिन जन कार्यक्रम से पूर्व हम श्री माताजी के साथ खरीददारी के लिए गए। श्रीमाताजी ने यूनानी क्राकरी खरीदी। श्री एथेना ने यूनानियों को यह कला सिखाई थी और मुझे लगता है एक बार फिर वे इस कला का प्रसार पूरे विश्व में करना चाहती हैं। जन–कार्यक्रम में एक हजार साधकों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। यह एक अभूतपूर्व परिणाम था। अगले दिन कबैला जाने से पूर्व, बुधवार को श्रीमाताजी ने आराम किया। वहाँ अपनी उपस्थिति के दौरान उन्होंने हमें इतने प्रेम और आशीर्वाद दिए कि इनका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। उन्होंने पूरा वातावरण परिवर्तित कर दिया और रहने के लिए हमें पहले से कहीं बेहतर स्थान प्रदान किया।

विनम्र नमस्कार।

जय श्री माताजी

वैभव खापाडे

यूनानी सहज सामूहिकता

श्री आदिशक्ति पूजा

काना जोहरी अमरिका, (2.7.2000)

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आदिशक्ति के विषय में मैं पहले ही आपको बता चुकी हूँ कि किस प्रकार उन्होंने आपकी सहायता की, सर्वप्रथम विश्व के सृजन के लिए और तत्पश्चात् उत्क्रान्ति प्रक्रिया के माध्यम से मानव का सृजन करने के लिए किस प्रकार उन्होंने विश्व में बहुत सारी चीज़ें कार्यान्वित की।

इसके पश्चात् उन्होंने मानव को सुख प्रदान करने व मार्ग दर्शन करने के लिए (to comfort and to counsel) कार्य किया। मानव का मार्ग दर्शन करने के लिए बहुत से अवतरण पृथ्वी पर अवतरित हुए। उन्होंने बताया कि उचित क्या है, अनुचित क्या हैं, हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। उच्चतम जीव होने के नाते मानव का आत्मसम्मान क्या है और उसके कर्तव्य क्या है, यह सब भी उन्होंने बताया। सभी देशों में एक के बाद एक अवतरण अवतरित हुए। वे आए और उनके परामर्श से भिन्न धर्म बने। यह सब आप भिन्न धर्मों में देखते हैं कि किस प्रकार उनके जीवन व्यर्थ हो गए! उन्होंने एक के बाद एक धर्म बनाए और उन धर्मों के कारण मनुष्य भिन्न समूहों में विभाजित होते चले गए। इस प्रकार विभाजित हुए कि एक दूसरे से घृणा करने लगे। एक धर्म में उत्पन्न हुआ व्यक्ति दूसरे धर्म को मानने वाले व्यक्ति से घृणा करता है। तो मार्गदर्शकों के रूप में आए सन्तों ने क्यों पूर्ण एकता, मानवजाति की पूर्ण एकता की बात कही? इसके बावजूद भी स्वच्छन्द मानवमस्तिष्क ने सभी प्रकार की गलतियाँ की और एक ऐसे देश, ऐसे विश्व की सृष्टि की जो धर्म के कारण उत्पन्न होने वाली अनगिनत समस्याओं से भरा हुआ है। धर्म किस प्रकार घृणा सिखा सकता है? धर्म तो प्रेम तथा करूणा को समझने तथा आत्मसात करने के लिए है। अतः तीसरा कार्य जो मनुष्य को करना है वह है आदिशक्ति का कार्य। हमारे अर्न्तस्थित कुण्डलिनी की जागृति द्वारा हमें 'शुद्ध ज्ञान', पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ। शुद्ध ज्ञान जिसे चुनौती नहीं दी जा सकती। यह पूर्ण भी है। **आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् जो ज्ञान आपको प्राप्त होता है वह पूर्ण है।** ये बात यदि आप जान जाएं तो आप समझ जाएंगे कि सभी कुछ सामूहिक है। न आप किसी से घृणा कर सकेंगे और न किसी से झगड़ सकेंगे। ऐसा यदि होने लग जाए तो विश्व की सभी समस्याओं का अन्त हो जाएगा।

उद्धार आदिशक्ति का प्रथम गुण हैं। वे लोगों को अन्य मनुष्यों के प्रति गलत विचारों से मुक्त करना चाहती थीं। **हम जानते हैं कि हमारे षड्रिपु हैं जिन पर विजय प्राप्त किए बिना हम धार्मिक व्यक्ति नहीं हो सकते। यही कहा गया है। परन्तु वास्तव में सभी धर्म हमारे अन्तर्स्थित इन छः शत्रुओं को बढ़ावा देने में लगे हुए हैं। यह बात जब आप स्पष्ट देख लेते हैं तो वास्तव में, गम्भीरता पूर्वक सत्य को खोजने लगते है। सत्य, पूर्ण सत्य का प्रकटीकरण केवल आपकी उत्क्रान्ति तथा, आपमें हुए मौलिक परिवर्तनों द्वारा ही हो सकता है।** तब आप ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जिसे हर चीज़ का ज्ञान हो जाता है। इसके लिए आपके अन्दर कुण्डलिनी के रूप मं विराजित आदिशक्ति का उत्थान आवश्यक है। ये उत्थान जब घटित हो जाता है तो स्वतः ही इन षट्रिपुओं से आपको मुक्ति प्राप्त हो जाती है। तब आप अत्यन्त सुन्दर मानव बन जाते है, उस कमल की तरह से जो अंकुरण की अवस्था में जोहड़ में विद्यमान छोटे–छोटे गन्दे कीड़े–मकोड़ों जैसा दिखाई देता है परन्तु उस पानी से बाहर आकर जब वह खिलता है तो बहुत सुन्दर पुष्प बन जाता है। इसी प्रकार सहजयोगी भी सांसारिक गंदगी में रहते हुए सुन्दर कमल की तरह से खिल उठता है। संसार रूपी जोहड़ के कीड़े–मकोड़ों तथा गन्दगी से वह ऊपर उठ जाता है। ऐसा व्यक्ति केवल शुद्धजल रूपी अच्छाई को ग्रहण करता है और संसार रूपी गन्दगी ज्यों कि त्यों वहीं बनी रहती है। तो अब आपके अन्दर कमल की तरह पावनता, सौन्दर्य और सुगन्ध के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रहता। जल में विद्यमान गन्दगी तथा कीड़े–मकोड़ों के आक्रमण होने की समस्या अब बाकी नहीं रह जाती। जो अवस्था आप लोगों ने प्राप्त कर ली है, मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि अमेरिका में भी बहुत से लोगों ने यह अवस्था प्राप्त कर ली है, यह बहुत बड़ा वरदान है क्योंकि अमेरिका एक महत्वपूर्ण देश है। यहाँ पर वैभव का बाहुल्य है। धन बाहुल्य, अच्छे सहजयोगी होने का मापदण्ड नहीं है। संतोष भाव महान है। जो भी कुछ आपके पास है उसी में सन्तुष्ट रहना।

दूसरा परिवर्तन जो आपमें घटित होता है वह है आपका सामूहिक हो जाना। यह घटित होना ही है। परन्तु मैं देखती हूँ कि अभी तक भी लोगों ने सामूहिकता का अर्थ नहीं समझा है। उदाहरण के रूप में यहाँ पर परिवार की संस्था बहुत दुर्बल है। स्वाभाविक सम्बन्धों पर आधारित तथा बनाए गए परिवार का यहाँ उतना सम्मान नहीं होता है जितना होना चाहिए। इसका कारण धन को बहुत अधिक महत्व दिया जाना है। धन के लिए लोग परस्पर लड़ने झगड़ने तथा एक दूसरे की हत्या करने लगते हैं। वास्तव में प्रेम तथा करुणा ही परिवार का आधार है। जिन लोगों

में इनकी कमी है वे अच्छे परिवार नहीं बना सकते। सहजयोगियों में भी मैंने देखा है कि धनार्जन में लगे पढ़े–लिखे लोग भी कभी–कभी उन लोगों को अपमान की दृष्टि से देखते हैं, जिनके पास पर्याप्त धन नहीं है। बच्चों की देखभाल और परिवार को बनाने में लगी घरेलू महिलाओं को उतना सम्मान नहीं दिया जाता जितना किसी संस्था में सचिव पद पर कार्यरत महिलाओं को। मैं नहीं समझ पाती कि महिलाओं में इस प्रकार पुरुषत्व क्यों आ जाता है! क्यों वे स्वयं को घर गृहस्थी में कठोर परिश्रम करने वाली, खाना बनाने, बच्चों की देखभाल करने और समाज के आक्रमण के आघात को सहने में लगी हुई महिलाओं से ऊँचा समझती हैं? मुझे लगता है कि अमरीका तथा अन्य पश्चिमी देशों में इस चीज का बहुत अभाव है। **धन जब आवश्यकता से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है तो लक्ष्मी तत्व का सम्मान नहीं होता।** अत्यन्त आश्चर्य की बात है। लक्ष्मीजी के वरदानों में से धन भी एक है। परन्तु परिवार को चलाने वाली गृहलक्ष्मी का सम्मान नहीं होता। मैं आपको बताएं देती हूँ कि ऐसा करने से बड़ी भयानक घटनाएं घटित हो सकती हैं। आप कार्य करें, पढ़े–लिखें परन्तु आपमें परिवार की देखभाल करने, उनकी सुख–सुविधा तथा एकता को देखने की योग्यता भी होना आवश्यक है। पढ़ी–लिखी महिलाओं के स्थान पर मैं उन्हें पौरुषमय महिलाएं कहती हूँ। पढ़ी–लिखी महिलाएं सोचती हैं कि वे घरेलू महिलाओं से कहीं ऊंची हैं। ये उनकी बहुत बड़ी गलती है। किसी भी प्रकार से पुरुष महिलाओं से श्रेष्ठ नहीं है। अतः इस प्रकार का भेदभाव जो विद्यमान है और जिसके कारण महिलाएं सोचती हैं कि हम कमाती हैं, हम पढ़ी–लिखी हैं, ऐसी महिलाएं वास्तव में पुरुषों सम होती है। जो महिलाएं घर में प्रेम पूर्वक परिश्रम करती हैं, बच्चों की और परिवार की देखभाल करती हैं वे किसी भी तरह दफ्तरों में कार्य करने वाली महिलाओं से कम नहीं है। ऐसी महिलाओं का पतियों तथा परिवार के अन्य पुरुषों को सम्मान करना चाहिए। केवल इतना ही नहीं, सहजयोगियों को ऐसी महिलाओं का अत्यन्त सम्मान करना चाहिए जो इतना कठिन कार्य कर रही है। मैं स्वयं एक गृहणी हूँ और जानती हूँ कि घर चलाना बच्चों की देखभाल करना, पूरे परिवार को देखना और सीमित धन से पूर्ण व्यवस्था क्या होता है। यह अहम् समाप्त होना ही चाहिए।

उस दिन एक महिला मुझ से साक्षात्कार (Interview) करने के लिए आई। उसने मुझसे पूछा कि पुरुषों के इस संसार में आपका इतना अधिक सम्मान कैसे है? पुरुषों का संसार! मुझे हँसी आ गई। वह कैसे सोच सकती है कि यह पुरुषों का संसार है? यह बात मैं नहीं समझ सकती। क्या पुरुष महिलाओं के बिना जीवित रह सकते हैं? उसके प्रश्न पर मैं हैरान थी क्योंकि उसने

कहा कि जेल में भी अपराधी आपका सम्मान करते थे। मैंने कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि अपराधियों की माताएं हैं या नहीं हैं। क्या सभी पुरुषों की माताएं नहीं हैं? सभी की माँ है और सभी माँ का सम्मान करते हैं। यह बात सभी को ज्ञात होनी चाहिए कि जहाँ तक बच्चों का सम्बन्ध है पुरुष की अपेक्षा महिला अधिक महत्वपूर्ण है। परन्तु मैंने देखा है कुछ महिलाएं सोचती हैं कि वे बहुत अधिक योग्य हैं, सभी को नियंत्रित करने का प्रयत्न करती हैं और समस्याएं खड़ी करती हैं। **माँ का कार्य नियंत्रण करना नहीं है। उसका कार्य प्रेम करना और करुणा प्रदान करना है।** महिलाओं का यह गुण उन तथाकचित विकसित पाश्चात्य देशों में समाप्त हो गया है। यह बहुत भयानक बात है। व्यक्तिगत रूप से मैं सोचती हूं कि यदि ऐसा ही घटित होता रहा तो परिवार टूट जाएंगे। परिवार की देखभाल करने वाली महिला का कोई सम्मान नहीं करेगा। ऐसी महिला तो परिवार में प्रधानमंत्री से भी बढ़कर है, उसे समझा जाना चाहिए और उसका सम्मान किया जाना चाहिए।

आज ये बताना महत्वपूर्ण है कि आप सब को गृहणियों का मूल्य समझना चाहिए। गृहणी बने रहना बहुत बड़ा कार्य है। मैं स्वयं गृहणी रही हूँ और जानती हूँ कि यह कितना कठिन है। गृहणी का यदि सम्मान न होगा तो वह बच्चों की देखभाल नहीं करेगी। बच्चे कल के नागरिक हैं। उन्हें कौन शिक्षण देगा और कौन उनका पालन पोषण करेगा। पुरुषों सम इन सभी महिलाओं को कई बार बच्चे उत्पन्न नहीं होते। अतः बच्चों की समस्याओं का ज्ञान उन्हें नहीं होता। जो लोग बच्चों की समस्याओं के समाधान में लगे हुए हैं उन्हें अपनी जिम्मेदारी अवश्य समझनी चाहिए। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है जिस पर सभी पाश्चात्य समाज लड़खड़ा रहे हैं, क्योंकि उनकी संस्कृति में माँ का कोई स्थान नहीं है।

अतः महिलाएं यदि गृहणियां है, माताएं हैं और बच्चों की देखभाल करती हैं तो उन्हें किसी भी प्रकार से स्वयं को हीन नहीं समझना चाहिए। स्वयं को महान समझने वाले लोगों की तुलना में माताओं में किसी भी प्रकार की हीनता की भावना नहीं आनी चाहिए। मूलतः परिवार एकसूत्रबद्ध होने चाहिएं। यह सामूहिकता सर्वप्रथम परिवार में आनी आवश्यक है। बच्चों की शिक्षा–दीक्षा ठीक से होनी चाहिए, उनका पालन–पोषण भली भांति होना चाहिए। आजकल आप देखते हैं कि बच्चों के साथ क्या हो रहा है। बच्चों के विषय में जब मैं पढ़ती हूँ तब मुझे सदमा पहुँचता है कि बच्चों के साथ इस प्रकार व्यवहार हो रहा है मानो वो कोई अवांछित चीज़ हैं। उनकी ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जाता। अन्ततः बच्चे नशे के आदी हो

जाते हैं और आवारा बन जाते हैं। बच्चों के प्रति इतनी घृणा और लापरवाही के कारण बच्चे कुछ भी बन सकते हैं।

अतः व्यक्ति को सर्वप्रथम यह बात समझनी है कि सामूहिकता के हित में बच्चों की देखभाल की जानी आवश्यक है। केवल इतना ही नहीं, अत्यन्त प्रेम एवं करुणा पूर्वक बच्चों की देखभाल करनी चाहिए। उन पर तानाशाह बनकर नहीं, उनके लिए आनन्द और करुणा का स्रोत बनकर। अपने एक प्रवचन में मैंने आपको **भावनात्मक विवेक (Emotional Intelligence) के विषय में बताया था। आपको यही आत्मसात करने का प्रयत्न करना चाहिए। भावनात्मक विवेक अर्थात भावनाओं पर आधारित विवेक। जब तक हम भावनात्मक रूप से विवेकशील नहीं हो जाते हमारा समाज सुधर नहीं सकता।** भावनात्मक विवेक में आप प्रेम करते हैं और प्रेम का आनन्द लेते है। अत्यन्त भावनात्मक सूझ–बूझ से अन्य लोगों के लिए आप सभी कुछ करते हैं। किसी एक बच्चे या एक बेटी के लिए नहीं सभी के लिए। आपको भावनात्मक रूप से विवेकशील होना चाहिए। कुछ बच्चे जन्मजात ऐसे होते हैं परन्तु कुछ को ऐसा बनाना पड़ता है कि वे भावनात्मक रूप से विवेकशील बन जाएं। उनके माता–पिता यदि धनलोलुप तथा स्वार्थी हैं तो वे बच्चे को अन्य लोगों को कुछ भी देने की आज्ञा नहीं देंगे। ऐसे बच्चे का विकास बड़े अजीब ढंग से होगा और वह कभी किसी को कुछ न देगा, देश को भी नहीं। वो क्यों ऐसा करे? स्वार्थ ही उसका सभी कुछ है। ऐसे लोग सभी प्रकार के भ्रष्टाचार तथा बुराइयों में लिप्त हो जाते हैं क्योंकि उनका दृष्टिकोण ही ऐसा बन चुका होता है।

अब हम सामूहिकता की बात कर रहे हैं। सामूहिकता में हम अन्य लोगों के लिए कार्य करते है। अन्य लोगों के लिए कार्य करने में हमें आनन्द आता है। अन्य लोगों को देने में हमें अच्छा लगता है, केवल स्वयं को नहीं। अन्यथा आपके बच्चे भी वैसे ही बन जाएगे और केवल अपनी ही चिन्ता करेंगे। यह भावनात्मक विवेक हमारे जीवन में तथा हमारी शैली में लाया जाना चाहिए। क्या हम भावनात्मक रूप से विवेकशील हैं या केवल विवेकशील या भावनात्मक? दोनों गुण नहीं हैं। आप यदि केवल विवेकशील हैं तो अत्यन्त शुष्क व्यक्तित्व हो सकते हैं। या तो आपके बहुत थोड़े से दोस्त होंगे या फिर आपका कोई मित्र ही न होगा और सदैव स्वयं को सामूहिकता से दूर रखने में लगें रहेंगे। यदि आप केवल भावनात्मक हैं तो आप किसी एक व्यक्ति, किसी एक बच्चे से ही जुड़े रहेंगे। पूरे समाज में बिना कारण के केवल एक ही व्यक्ति से आप जुड़े रहेंगे। क्यों आप एक ही व्यक्ति से लिप्त हैं? केवल एक ही व्यक्ति की चिन्ता क्यों करनी है? ऐसे सभी लोग इस लिप्सा के शिकार हो जाते हैं।

राजनीति में आपने देखा है कि किस प्रकार लोग अपने बेटों, बेटियों की सहायता में लगे रहते हैं। इस प्रकार की भावनात्मक लिप्सा से हम भारतीयों ने बहुत हानि उठाई है।

नीतिशास्त्र के अनुसार भावनात्मक विवेक ऐसा उच्चगुण है जिसके द्वारा आप अन्य लोगों को देते हैं। अन्य लोगों की आप चिन्ता करते हैं और सभी के लिए आप सामूहिक हो जाते हैं। आजकल एकान्तिकता (Exclusiveness) का भी फैशन है। एकान्तिक होना, क्योंकि आप आम जनता में से एक नहीं होना चाहते, कुछ विशेष बने रहना चाहते हैं। **आपको भावनात्मक विवेक में विशिष्ट होना चाहिए। अन्य चीज़ों में नहीं।** यह सर्वोत्तम गुण आप अपना सकते हैं। मैं मात्र एक महिला हूँ, एक माँ हूँ परन्तु वास्तव में मेरे अन्दर भावनात्मक विवेक है। भावनात्मक विवेक का पूर्ण सागर मुझमें है, इसके द्वारा मैं सभी के विषय में जान लेती हूँ, उन्हें समझ लेती हूँ। मेरे इस गुण के कारण ही यह सभी कार्य हुआ है। किसी एक व्यक्ति या शैली से मैं लिप्त नहीं हूँ।

जो भी कुछ आप कहते हैं मैं सब समझ सकती हूँ। मैं एक ऐसे स्तर पर हूँ जहाँ से मैं आपके सभी कार्यों को समझ सकती हूँ। वह स्तर प्राप्त करने के लिए आपको भावनात्मक विवेक विकसित करना चाहिए। यहाँ तो बच्चे दूसरे बच्चे को खेलने के लिए खिलौना भी नहीं देंगे। माता पिता भी वैसे ही है। अत्यन्त स्वार्थी। हमारा अपना होना चाहिए। सभी कुछ हमारा अपना होना चाहिए। यह भावना समाप्त होनी आवश्यक है। अमेरिका में से यह चीज विशेष रूप से चली जानी चाहिए क्योंकि इस प्रकार की स्वार्थ–परता में वह अगुआ राष्ट्र है। उनके स्वार्थों की मैंने गिनती तो नहीं की परन्तु आप उन्हें जानते हैं। इसके विषय में आप जाकर कनाडा मैक्सिको और पेरू के लोगों से पूछें, वे आपको बताएंगे। स्वार्थी होने पर उन्हें लज्जा भी नहीं आती। अन्य लोगों का अनुचित लाभ उठाने पर उन्हें लज्जा नहीं आती। यह बात उन्हें कोई बता भी नहीं सकता क्योंकि वे सोचते हैं कि ये बहुत ही सम्पन्न लोग हैं। परन्तु **यह सारा वैभव उन्हें जीवन का आनन्द नहीं प्रदान करेगा। जीवन का आनन्द तो भावनात्मक विवेक में निहित है। इसके अभाव में जीवन बहुत शुष्क हो जाता है। जीवन अत्यन्त असहनीय एंव भयावह हो जाता है और परिवार भी टूट जाते हैं। भावनात्मक विवेक यदि नहीं है तो परिवार टूट जाएंगे।** मैं ऐसी बहुत सी महिलाओं को जानती हूँ जिन्होंने तीन विवाह किए, पाँच विवाह किए। मै नहीं जानती कि लोग किस प्रकार ऐसा कर सकते हैं! परन्तु भावनात्मक विवेक के अभाव में ही उन्होंने ऐसा किया। लेकिन वो समझते हैं कि उन्होंने बलिदान किया। इस प्रकार से आप कुछ भी बलिदान नहीं करते।

एक अन्य धारणा ये है कि हमें ये सब सहना है। सहने जैसा भी कुछ नहीं है। ईसा–मसीह के जीवन को देखें। उन्होंने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, क्यों? ये सब करने की उन्हें क्या आवश्यकता थी? इसके पीछे सत्य था। जब सत्य आपके साथ होता है, सत्य का प्रकाश आपके साथ होता है, सत्य की शक्ति आपके साथ होती है तब आपमें भावनात्मक विवेकशीलता आ जाती है। आप समझ जाते हैं कि यदि आप किसी को प्रेम करते हैं तो उसके लिए आपको सभी कठिनाइयाँ झेलनी होंगी। बहुत सी व्यर्थ की बकवास सहन करनी होगी। मैं जानती हूँ ये सब कहना बहुत अधिक है। परन्तु मैंने सोचा कि पूजा के इस विशेष अवसर पर मुझे पारिवारिक जीवन के विषय में कुछ बताना चाहिए। **अपने आश्रमों, कार्यक्रमों या जहाँ भी हम हों हमें स्मरण रखना चाहिए कि जब हम सहजयोग के विषय में बातचीत करते हैं तब क्या हमारे अन्दर भावनात्मक विवेक है। यह बताने के लिए सभी जगह मेरा उपस्थित होना क्यों आवश्यक है। आप उन्हें बता सकते हैं। आपमें यदि भावनात्मक विवेक हैं तो सभी लोग आपकी बात सुनेंगे। क्यों नहीं सुनेगे?** आवश्यक नहीं है कि सभी स्थानों पर जाकर मैं ही लोगों को बताऊ मैं कितने देशों में जा सकती हूँ? **भावनात्मक विवेकशीलता से बताई गई बात के प्रति प्रतिक्रिया भी बहुत ही अच्छी और बहुत ही सुन्दर होती है।** यह आश्चर्य की बात है बेनिन जैसे देश में जहाँ सभी मुसलमान है, श्यामवर्ण हैं, वे सब सहजयोगी बन गए हैं! नौ हजार लोग सहजयोगी बन गए हैं। ये सब कार्य मैं किस प्रकार कर पाई? आप इसके विषय में सोचें। नौ हजार एक बहुत बड़ी संख्या है। अन्य देशों में भी मैंने देखा है भावनात्मक विवेक की ये शक्ति लोगों के हृदय जीतती है।

आपके पास जितनी चाहे सम्पति हो, धन आदि हो, लोग आपसे घृणा करेंगे। आप कहेंगे, दोष कहाँ है? इसमें दोष ये है कि आप महानतम रचना– 'मानव' को हानि पहुँचा रहे हैं। राजनीतिज्ञों के रूप में भी लोग भयानक हैं क्यों? क्योंकि उनमें भावनात्मक विवेक नहीं है। प्रशासकों के रूप में भी वे बहुत कठोर हैं क्योंकि उनमें भावनात्मक विवेक नहीं है। इन सब लोगों में भावनात्मक नामक महान गुण का पूर्ण अभाव है। आपका देश यदि प्रगतिशील है तो, मैं कहूंगी, आपको भावनात्मक विवेक में प्रगति करनी चाहिए। वैसे भी वे परोपकारी हैं। मै जानती हूँ कि अमरीका के लोग प्रसिद्ध परोपकारी हैं। परन्तु उनके परोपकार के पीछे सत्ता की भूख छिपी हुई है। अपने धन से वे लोगों पर शासन करना चाहते हैं। क्या यही भावनात्मक विवेक हैं? शासन प्राप्त करने के लिए यदि वे किसी प्रकार का परोपकार कार्य आरम्भ कर लें, या दूरदर्शन पर या विज्ञापनों में प्रसिद्धि पाने के लिए

ऐसा कुछ करें और फिर दर्शायें कि वे बहुत बड़े पूंजी पति हैं तो ये परोपकार नहीं है। इस प्रकार हंगामा कर के तो वे अपना स्वार्थ–सिद्ध करना चाहते हैं।

आप सहजयोगी हैं आपकों विश्वभर में भावनात्मक विवेका एवं प्रेम की लहरियाँ प्रसारित करनी होंगी। आपको ये दर्शाना होगा कि प्रेम से किस प्रकार आप सबको जीत सकते है। ऐसा तभी सम्भव है जब आप पूर्णतः निर्लिप्त हों। यदि आप केवल अपने देश से लिप्त हैं (यह बहुत बड़ा मामला है) तो आप अन्य देशों का अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे उनसे लाभ उठाएगें और उन्हें कुचलने का प्रयत्न करेंगे। परन्तु यदि आप भावनात्मक विवेक से अपने देश से जुड़े हुए हो तो वास्तविक रूप से अच्छा कार्य करके आप अपने देश का नाम रोशन करेंगें। मैं नहीं जानती कि क्यों लोगों को अच्छे–बुरे का विवेक नहीं है, वे इतने स्वार्थी क्यों है? क्यों वे सारी अच्छाई अपने लिए चाहते हैं। यह सब प्राप्त करने का अवसर आप सबके पास है क्योंकि आप सब सहजयोगी है, आप सब कमल–सम बन चुके हैं। कमल में सुगंध होती है जो चहुँ ओर फैल जाती है। कई–कई दिनों तक कमल उस गन्दे पानी में रहता है और अपनी सुगन्ध फैलाता रहता है। उस सुगंध से भी आप बहुत से कार्य कर सकते है। मधुमक्खियाँ आकर कमल रूपी सुन्दर घर में सो जाती हैं और रात्रि के समय अत्यंत सावधानीपूर्वक यह कमल बन्द हो जाता है। फूल को सुन्दर बनाने के लिए सभी प्रकार के गुण उसमें विद्यमान हैं। उस सुगन्धि का सार–तत्व हम भी ग्रहण कर सकते हैं। उससे कुछ शहद भी प्राप्त कर सकते हैं। जहाँ तक सम्भव हो सभी लोग उस पुष्प तक आते हैं। इसका अभिप्राय ये नहीं है कि पुष्प दुर्बल है, यह तो उसका गुण है, उसकी शक्ति है, उसकी सूझ–बूझ है। आप भी ऐसे ही हैं। आप सबको कमल बना दिया गया है। आपको रेंगने वाले जीवों की तरह से या मूर्ख गधों सम नही बनाया गया। नहीं।

आपको अपने प्रेम की, अपनी करुणा की सुगन्ध अन्य लोगों को देनी है और ऐसा करके प्रसन्न होना है। इसका अर्थ ये नहीं है कि आप यह त्याग दें, वह त्याग दें, ऐसा कुछ नहीं है। इसका अर्थ ये हैं कि **अपनी सारी संभावनाओं तथा शक्तियों से आप अन्य लोगों के हित का कार्य करें। उन्हें साक्षात्कार दें। जितना आप ये कार्य करेंगे उतनी ही सामूहिकता बढ़ेगी।** अमरीका के लिए यह विशेष रूप से आवश्यक है क्योंकि सभी लोग अमरीका का अनुसरण करने का प्रयत्न कर रहे हैं? धनार्जन में, इस व्यापार में, उस व्यापार में। परन्तु आप सहजयोगी हैं। आपने केवल इतना करना है कि अपनी उपलब्धियों का लाभ उठाएं और उसे अन्य लोगों में बाँटे। अन्य लोगों को

आत्म साक्षात्कार दें। साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् भी बहुत से लोग इसकी चिन्ता नहीं करते। न वो कहीं जाते हैं और न ही सहजयोग का प्रचार–प्रसार करते है। उन्हें इसकी चिन्ता ही नहीं है। इस बात से कभी–कभी मुझे बहुत चोट पहुँचती है। मुझे विश्व भर में जाकर पागल लोगों से बातचीत करने और सहजयोग बताने की क्या आवश्यकता थी? मेरी तरह से अब आप लोगों को भी सोचना चाहिए कि आपको यह कार्य करना है। हमें यह विश्व परिवर्तित करना है। विश्व के लोगों को सहजयोग में लाना है। क्यों नहीं हम यह कार्य कर सकते? हमारी संख्या इतनी बड़ी है! ईसामसीह के केवल बारह शिष्य थे फिर भी किस प्रकार उन्होंने इसाई धर्म को फैलाया? आप लोग क्या कर रहे है? आप इतनी अच्छी तरह से सुसज्जित हैं, आपमें इतना ज्ञान है, पूर्ण ज्ञान एवं अनुभव है। **यदि आपमें अनुभव एवं ज्ञान है तो आप लोगों को कायल कर सकते हैं। आपमें अभी भी कुछ निहित आकांक्षाएं हैं जो सहजयोग संस्कृति विरोधी है। आप अगुआ बनना चाहते है, या किसी को नीचा दिखाना चाहते हैं या अपना कोई अन्त नहीं समझते। ये अच्छी बातें नहीं है। कुछ लोग अपने को आगे लाने के लिए सहजयोग करते हैं और सहजयोग का प्रचार करते हैं। यह तरीका ठीक नहीं है।**

ठीक मार्ग तो सहजयोग के प्रति समर्पण है, सहजयोग के काम के प्रति पूर्ण समर्पण। यह संभव है। बिल्कुल भी कठिन नहीं है। जैसा मैं आपको बता रही हूँ यह अत्यन्त सहज है। आपको केवल एक बात समझनी है कि पूरे ब्रह्माण्ड में आपका एक विशेष स्थान है। आप सड़ने के लिए नहीं हैं। अपना जीवन बर्बाद करने के लिए आप नहीं है। सहजयोग में हमने विवाह करने शुरू किए हैं। अमरीका में भी विवाहों के लिए कहा गया तो मैंने कहा ठीक है, यहाँ भी हम विवाह करेंगे। परन्तु इन विवाहों का परिणाम क्या है? ये विवाह भी यदि साधारण विवाहों की तरह से हैं तो इनका क्या लाभ है? ये अन्य लोगों के लिए क्या कर रहे हैं? किस तरह के बच्चे ये उत्पन्न कर रहे हैं? आपको ये देखना होगा कि जब आप सहजयोग में विवाह करते है तो आपका परिवार भिन्न प्रकार का होना चाहिए। परिवार के प्रति प्रेम भिन्न प्रकार का होना चाहिए। सहजयोग का सारा परिवार भी आप ही का परिवार है। अतः आपमें सभी के लिए प्रेम एवं करुणा होनी चाहिए। मैं देखती हूँ कि कुछ लोग बड़ी जल्दी उन्नत होते हैं, परन्तु कुछ लोग नहीं होते क्यों कि उनमें भावनाओं और विवेक के सन्तुलन की कमी है। यह सन्तुलन पूरी तरह से स्थापित किया जाना चाहिए। मैं जानती हूँ कि एक दिन अमरीका सहजयोग में लाखों

लोगों का नेतृत्व करेगा। बहुत सी गलत चीजें यहाँ अपना ली गई थी। नशा सेवन तथा अन्य बहुत सी बुरी चीजों को यहाँ अपना लिया गया था। अब यहाँ जो नए कमल खिले हैं उन्हें यहाँ के वातावरण को परिवर्तित करना है। यहाँ पर सभी प्रकार की गन्दगी, चरित्रहीनता पनप रही है और पूरे विश्व को नष्ट कर रही है। अतः अपने सामान्य दृष्टिकोण में भी हमें ये देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि क्या हम वास्तव में उन्नत हो रहे हैं? क्या हम वास्तव में वह सब कर रहे हैं जो हमें करना चाहिए? नैतिकता के लिए हम क्या कर रहे हैं? सहजयोग में यह महत्वपूर्ण बात है कि आप किस प्रकार के वस्त्र पहनते है, कैसे बातचीत करते है, कैसे चलते है? ये सभी चीजें महत्वपूर्ण हैं। और सभी गुण जो आपमें है उनका भी उपयोग करना चाहिए। **भिन्न चक्रों के गुणों को विकसित करने के लिए आपको चाहिए उन पर ध्यान दें। स्वयं देखें कि आप क्या कर रहे हैं? अपने जीवन का आप क्या कर रहे हैं। आप सहजयोगी हैं विशेष लोग है, आप सर्व साधारण नहीं है। मैं आपको बताना चाहूँगी कि आपमें आत्म सम्मान होना चाहिए।**

समझने का प्रयत्न करें कि आपके गुण क्या हैं? आप क्या हैं? बहुत–बहुत धन्यवाद।

परमात्मा आपको धन्य करें।

नवरात्रि पूजा

कबैला – 8.10.2000

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम देवी की पूजा करेगें। देवी को हम अम्बा के तथा कई अन्य नामों से जानते हैं। आप कह सकते हैं कि वे अन्तिमा है अर्थात अवशिष्ट शक्ति हैं। सभी कार्य करने के पश्चात् कुण्डलिनी बनकर वे त्रिकोणाकार अस्थि में विराजित हो जाती है। यह मूलाधार चक्र है। परन्तु वास्तव में उनकी अभिव्यक्ति बाईं ओर को अधिक होती है क्योंकि उस समय वे शुद्ध 'अम्बा' होती है।

सभी मनुष्यों में बाई ओर (भावनापक्ष) अधिक महत्वपूर्ण है। आपमें यदि भावना नहीं है तो आरम्भ में आप स्वयं को सन्तुलित नहीं कर सकते। कहा जाता है कि वे (श्री अम्बा) आपको सच्चे सहजयोगी का व्यक्तित्व प्रदान करती है। आपका भावना पक्ष (Left side) यदि दुर्बल है तो आपको उनकी पूजा करनी पड़ती है और उनसे प्रार्थना करनी पड़ती है कि कृपा करके मेरे बाएं भाग (भावनापक्ष) को सम्पन्न कर दें। वे सुखदाता हैं आपके शरीर के बाई ओर को सम्पन्न करके वे आपको आराम पहुँचाती हैं अर्थात वे आपको सुला देती हैं। आप यदि भविष्य के विषय में बहुत अधिक सोचते हैं, योजनाएं बनाते हैं तो आपको कुछ समस्याएं हो सकती हैं। परन्तु यदि आप सो सकें तो आपको बहुत आराम मिलता है। सो सकना और आराम कर पाना अत्यन्त सुखदाई है। श्री अम्बा की कृपा बिना आप सो भी नहीं सकते। उनकी अनुपस्थिति में आप सो नहीं सकते। अतः सोना शरीर का एक महत्वपूर्ण कार्य है जो बाई ओर की देन है। यही कारण है कि हम उनकी पूजा करते हैं क्योंकि वे हमें आराम प्रदान करती हैं।

वे ही हमें शान्ति प्रदान करती हैं और भ्रान्ति (Illusions) की दाता भी वही हैं। कलात्मक प्रतिभा भी उन्हीं की देन है। वे आपकी रक्षा करती हैं। ये बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि जो लोग परमात्मा के विरोध में हैं और वास्तविकता से दूर होने का प्रयत्न कर रहे हैं उनके लिए वे भ्रान्ति का सृजन करती हैं। वे आपको उन लोगों से अलग कर देती हैं क्योंकि आपको वास्तविकता का ज्ञान है। जो लोग कष्टकर हैं या उनके कार्यों को नष्ट कर रहे हैं उनके लिए भ्रान्ति की सृष्टि करती हैं। कुण्डलिनी के रूप में वे ही विराजमान हैं। हम कह सकते है कि उनका

एक भाग कुण्डलिनी है और दूसरा बाई ओर को विराजमान है।

उनका निवास सात स्तरों पर है। पहले स्तर पर जब आप उनका आनन्द लेने लगते है तब उनके गुणों के विषय में, जैसे आपको बताया गया है, वे शन्ति हैं, वे आपको प्रेम प्रदान करती है और वही सभी सुन्दर चीज़ों को सृजन आपके लिए करती हैं। वे माँ हैं और आपसे आशा करती हैं कि आप उनके सुरक्षण का आनन्द लें, उनके प्रेम का आनन्द लें और सदैव उनके संरक्षण में बने रहें। यह उनके कार्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग है।

दूसरे वे कुण्डलिनी है। अतः वे सातों स्तरों पर कार्य करती हैं। क्षैतिज रूप (Horizontally) से वे सातों स्तरों पर गतिमान होती हैं और सातों स्तरों पर ऊपर को उठती हैं। इन सातों स्तरों पर, दोनों ओर वे हमारे लिए बहुत सा कार्य करती हैं। इन सातों स्तरों पर वे किस प्रकार हमारी रक्षा करती हैं? जब आप बाईं ओर को जाने लगते हैं तब सात देवियाँ आपको सामान्य स्थिति में लाने का प्रयत्न करती हैं। इनके नाम शंखिनी, डाकिनी आदि हैं। उनके कारण आप सामान्य स्थिति में आ जाते हैं। उदाहरण के रूप में बहुत से मनौदेहिक रोग कैंसर आदि बाई ओर की देन हैं। **मनौदेहिक अर्थात जो शारीरिक एवं भावनात्मक दोनों तरह के हैं।** कई बार आप बहुत अधिक दाईं ओर को (आक्रमक) होते हैं और अचानक आप बाएं (भावनात्मकता) ओर को चले जाते हैं और इस प्रकार दोलक (Pendulam) की गति की तरह आप किसी भी स्थिति का शिकार हो सकते हैं। परन्तु बाईं ओर को ये सात शक्तियाँ हैं जो आपकी रक्षा इन रोगों से करती हैं तथा इनकी प्रबलता को कम करती हैं।

अतः एक समय तो ये शान्ति दाता होती हैं, आपकी देखभाल करती हैं, आपकी रक्षा करती हैं और मनोदेहिक रोगों से आपको बचाती हैं। ये अत्यन्त शक्तिशाली देवी हैं। यदि ये न होतीं तो, मैं नहीं जानती, क्या हो गया होता! तो हमें चाहिए अपने हृदय में उनकी पूजा करें। हमें उनको समझना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए। वे आपकी माँ हैं। कुण्डलिनी के रूप में वे आपकी व्यक्तिगत माँ हैं। केवल वही, श्री अम्बा, आपको पुनर्जन्म प्रदान करती हैं और बाईं ओर की स्वामिनी होने के नाते आपके उत्थान में आपको बहुत शक्ति प्रदान करती हैं। उनके बिना आप अपना संतुलन न कर पाते।

लोग जब बहुत ज्यादा आक्रामक स्थिति (Right Sided) में होते हैं तो कभी–कभी बहुत अति हो जाती हैं। उन्हें अजीबोगरीब रोग हो जाते हैं। उन्हें हृदयाघात या पक्षाघात हो सकता हैं। उनके शरीर का दायाँ हिस्सा पूरी तरह क्षत हो सकता है। वे चल भी नहीं सकते, अपना वज़न भी नहीं सम्भाल सकते। ये सब बहुत अधिक आक्रामकता के कारण

होता है। ऐसी स्थिति में वे (श्री अम्बा) ही उन्हें इस बुराई का आभास करवाती हैं। वे उन्हें सुझाती हैं कि वे अपनी आक्रामकता को त्याग दें और भावनात्मक पक्ष (Left side) को अपना लें। इसका अर्थ ये नहीं है कि बाईं ओर यदि दाईं ओर को (भावनात्मकता यदि आक्रामकता को) ठीक कर दे तो बहुत अच्छी बात है। उदाहरण के रूप में एक व्यक्ति जो बहुत अधिक घमण्डी और अक्खड़ है यदि वह एक दम विनम्र बन जाए और लोग सोचें कि वह रोग मुक्त हो गया है तो ये बात ठीक नहीं है। वास्तव में वह व्यक्ति बाईं ओर (तामसिकता में) को चला गया है। यद्यपि वह विनीत हो गया है फिर भी वह सामान्य नहीं है। बाएं ओर को होने के कारण अब भी वह बिल्कुल गलत है। बाईं ओर को झुके (अत्यधिक भावनात्मक) लोगों को स्किजोफ्रेनिया रोग होने लगता है। इस ओर ऊपर के स्तर पर ये सातों चक्र व्यक्ति को भयानक रोग दे सकते हैं। स्किजोफ्रेनिया उनमें से एक हैं। इसका इलाज हो सकता है। यदि आप ऐसे व्यक्ति को कुण्डलिनी जागृति द्वारा मध्य में ले आते हैं तो यह रोग ठीक हो जाता है। अत्यन्त बाईं ओर के लोग पागल भी हो सकते हैं। परन्तु इनमें दाईं ओर की समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। बाएं ओर को झुके हुए व्यक्ति को ज़िगर की समस्या नहीं हो सकती। उनका ज़िगर बढ़ तो सकता है (Enlarged Liver) परन्तु उनमें अत्यधिक गतिशील ज़िगर नहीं हो सकता। ऐसे लोगों को दमा या हृदयाघात रोग भी नहीं होते। उन्हें हृदयाघात नहीं होता। वे दूसरे लोगों को हृदयाघात दे सकते हैं परन्तु स्वयं उन्हें हृदयाघात नहीं होता।

अतः बाईं ओर को आपके चित्त के आकस्मिक झुकाव से आपकी देखभाल करने वाली ये सात देवियाँ हैं। फिर भी यदि आप बाईं ओर को झुकते चले जाएं, उदाहरण के रूप में यदि आप गलत गुरुओं के पास जाएं, तो ये गुरु आपके साथ क्या करते है? ये आपको बाईं ओर को ले जाते हैं, आपको कोई नाम दे देते हैं। हो सकता है ये किसी नौकर का ही नाम हो या किसी ऐसे व्यक्ति का जिसे इन्होने पकड़ रखा हो और अन्य लोगों को भूतबाधित करने के लिए जिसकी ये देखभाल कर रहे हों। तान्त्रिक मरे हुए लोगों की आत्माओं को वश में कर लेते हैं फिर उनका उपयोग सम्मोहित करने के लिए करते हैं।

जब किसी भी प्रकार से आप बाईं ओर को झुकने लगते हैं, किसी चीज़ की बहुत अधिक चिन्ता करने से, किसी चीज़ के लिए बहुत अधिक दुखी होने से या बहुत अधिक रोने चिल्लाने से, तब आपकी दाईं ओर की समस्याएं लुप्त हो जाती है। यही कारण है कि आप ऐसा करते हैं। परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। दाईं ओर की समस्याएं यदि ठीक भी हो जाएं तो भी व्यक्ति को बाईं ओर की समस्याएं हो जाती हैं जो कि कहीं

अधिक भयानक है। मैंने आपको बताया था कि सभी प्रकार के मनोदेहिक रोग, आपको डराने के लिए इनकी सूची मैं आपको नहीं देना चाहती, बाईं ओर से आ जाते है। अब क्योंकि दाईं तरफ बिल्कुल ठीक हो गई है, लोग सोचते हैं कि मृत आत्माओं का उनके अन्दर प्रवेश कर जाना अच्छी बात है। तो ये कुगुरु मृत आत्माओं को वश में करते हैं। ये जानते हैं कि किस प्रकार मृत आत्माओं को वश में करना है। ये सब बताने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि आपने ऐसा कुछ नहीं करना। मृत आत्माओं को वश में करके वे आपको कहते हैं कि यह नाम ले लो और आप वह नाम लेना शुरू कर देते हैं। ये कुगुरु आपको ये नहीं कहते कि किसी अवतरण का नाम लो ये आपको कहेंगे कि आप राम का नाम लो। अब राम का नाम लेने के लिए इससे पूर्व श्री लगना आवश्यक है। जैसे श्री राम, श्री कृष्ण, श्री माताजी। परन्तु ये लोग नाम से पूर्व श्री नहीं लगाते। आपको केवल ये नाम लेने के लिए कहते हैं और ये नाम लेकर आप बाईं ओर को चले जाते हैं क्योंकि ये मृत आत्माएं है जो आपको पकड लेती हैं। मृत आत्माएं बाईं ओर को होती है और दाईं ओर को भी। दाईं ओर की मृत आत्माएं अत्यन्त महत्वाकांक्षी लोगों की होती हैं और वे आपको वशीभूत करने का प्रयत्न करती हैं। इस सारी चीज़ का ये वर्णन अत्यन्त डरावना है। एक बार जब ये आपको पकड़ लेती हैं और आप दाईं ओर को चले जाते हैं तो आपमें दाईं ओर के सभी गुण आ जाते हैं। आप सामान्य व्यक्ति नहीं होते। कभी आपको लगता है कि आप हवा में उड़ रहे है। आप ऐसी चीज़ें देखते हैं जो सामान्य व्यक्ति नहीं देखता।

दो अमरीकन मेरे पास आए, वे पत्रकार थे। मैंने उनसे आने का कारण पूछा? कहने लगे, माँ आप हमे हरीशचन्द्र जैसा बना दो। हरीशचन्द्र नाम का एक पत्रकार था। वह हवा में विचरण किया करता था और कहीं की भी खबर उसे होती थी। वह बता देता कि बम्बई के फलां हिस्से में क्या हो रहा है–जुहू बीच पर क्या हो रहा है? एक दिन समाचार पत्रों में जुहू बीच की कोई घटना छपी और संवाददाता के रूप में उसका नाम छापा गया। हरीशचन्द्र ने आपको मेरा नाम किस प्रकार बताया? मैंने तो उसकी यह समस्या ठीक की थी, वही समस्या अब आप क्यों लेना चाहते हैं? वो कहने लगे, हम ये वायु विचरण की सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं। किसलिए? क्योंकि हम पत्रकार हैं, हर चीज़ का हमें बहुत ज्ञान है, हम सर्वत्र विचरण करना चाहते हैं। मैने कहा, मैं यह कार्य नहीं करती। आप यदि वायु में विचरण करते हैं तो मैं उसे कम अवश्य कर सकती हूँ। इन सब कुगुरुओं ने किसी न किसी आक्रामक मृत आत्मा को वश में करके वायु विचरण की इस कला को सिद्ध कर लिया था। तो दाईं ओर की ये आत्माएं अत्यन्त महत्वाकांक्षी होती हैं, सभी प्रकार के रोगों को ठीक करती

हैं और भविष्यवादी होने के कारण हर तरह की भविष्यवाणियाँ करती हैं। कभी उन्हें उनका ज्ञान होता है कभी नहीं होता, परन्तु इन सबका स्रोत गलत होता है। अतः इनके जाल में फँसना अच्छा नहीं है। कोई व्यक्ति यदि इस प्रकार से भूत बाधित है तो वह सभी प्रकार के उल्टे कर्म करने लगता है। वह आपके घर पर कब्जा करने का प्रयत्न करेगा, आपका धन हथियाना चाहेगा। आपको धोखा देने का प्रयत्न करेगा या आपकी पत्नी को लेकर दौड़ जाने की कोशिश करेगा। सभी प्रकार के गलत कार्य करने का प्रयत्न करेगा क्योंकि दाईं ओर का प्रभाव बहुत अधिक बढ़ जाता है।

एल.एस.डी. आदि कुछ ऐसे नशीले पदार्थ भी हैं जिनके सेवन से आप दाईं ओर को चले जाते हैं और आपको रंग दिखाई देने लगते हैं। लोग सोचते हैं कि रंग देख पाना बहुत बड़ी बात है क्योंकि सामान्य व्यक्ति रंग नहीं देख पाता। वो नहीं जानता कि मूलतः उनमें क्या दोष है। मूलतः उनमें यह दोष है कि उनमें कोई भूत है जो अत्यन्त आक्रामक है और उनमें प्रवेश करके इस प्रकार के कार्य करने लगा है। परन्तु बाईं ओर के भूत भिन्न प्रकार के होते हैं। वे अत्यन्त धूर्त होते हैं और उल्टी सीधी बातें सिखाते हैं। इस तरह से वो आपको अपने जाल में फँसा लेते हैं कि व्यक्ति किसी भी सीमा तक झूठ बोल सकता है। वह झूठ बोलता है और आपका सभी कुछ हथियाने का प्रयत्न करता है। सभी प्रकार की रहस्यमय योजनाएं बनाता है। कुछ भी स्पष्ट नहीं होता और बिना समझे आप किए चले जाते हैं। इस प्रकार के लोग, चाहे वे दाईं ओर के हों या बाईं ओर के, भौतिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं। बहुत सी चीजें घटित होती हैं जैसे रूढ़िवाद। व्यक्ति यदि रूढ़िवादी है तो ये भूत इनको वश में कर लेते हैं और उन पर हावी हो जाते हैं। ये आपको सिखाते हैं कि उन लोगों का वध कैसे करना है जो आपके धर्म या पंथ से संबंधित नहीं हैं। वे ऐसे विचार देते हैं, लड़ते हैं, झगड़ते हैं और हत्याएं करते हैं। परन्तु पृथ्वी माँ या सागर ऐसे तत्वों का विनाश कर सकते हैं। आप देखेंगे कि ऐसे स्थानों पर बड़े–बड़े भूचाल आते हैं और उन्हें नष्ट कर देते हैं या तूफान उन्हें नष्ट कर देता है। निःसन्देह कुछ निर्दोष लोग भी उनके साथ मारे जाते हैं। चाहे जैसी बुराइयाँ आप करें ये पंचतत्व इन्हें सुधार देते हैं।

भारत में लातूर नाम एक स्थान है जहाँ लोग शराब में मदमस्त रहते थे। गणेश चतुर्थी के अवसर पर गणेश जी की प्रतिमा विसर्जित करने के पश्चात् एक बार उन्होंने बहुत शराब पी। श्री गणेश की प्रतिमा को तीन, सात या दस दिन के पश्चात् विसर्जित किया जाता है। नशे में मदमस्त वे श्री गणेजी की स्तुति गा रहे थे और साथ ही साथ उल्टी सीधी

गालियाँ व बातें कर रहे थे अचानक वहाँ पर भूचाल आ गया। नशे में मदमस्त नाचते हुए वे लोग पृथ्वी में समा गए। वहाँ पर हमारा एक ध्यान केन्द्र था, आश्चर्य की बात है भूचाल ने उस केन्द्र को छुआ तक नहीं। केन्द्र से सौ गज़ दूर वृत्ताकार में सारी पृथ्वी धँस गई। कोई वहाँ से निकल न सका। सभी लोग आश्चर्य चकित थे कि किस प्रकार यह केन्द्र अछूता बच गया है! यह देवी की शक्ति है। जब वे देखती हैं कि आसुरी लोग आपको सताने या परेशान करने के लिए आ रहे हैं तो देवी अच्छे लोगों की रक्षा करती हैं। जैसा कि आप जानते हैं यदि कोई एक व्यक्ति अच्छा है तो सौ बुरे लोग उसके पीछे लग जाऐगें और वह व्यक्ति बुझ कर रह जाता है। देवी ऐसे व्यक्ति की रक्षा करती है और उसे कष्टों तथा आसुरी शक्तियों से बचाती है। तो आपकी ये माँ सभी आसुरी शक्तियों से युद्ध करती है। ऐसे लोग शराबी भी हो सकते हैं, देवी उन्हें भी नष्ट कर देती है। निचले स्तर पर वे उनके ज़िगर नष्ट कर देती हैं। और ऊपर के स्तर पर वे उनके परिवार नष्ट कर देती हैं, उनका धन समाप्त कर देती हैं। मैने कभी नहीं सुना कि किसी शराबी की मूर्ति स्थापित की गई हो। कहीं भी ऐसा नहीं किया गया। शराब पीना जहाँ, फैशन है, शराब की जहाँ प्रतिदिन पूजा की जाती है, वहाँ भी किसी शराबी का पुतला नहीं स्थापित किया गया। ऐसा क्यों नहीं किया गया? क्योंकि अभी भी विवेक प्रबल है और लोग ये जानते हैं कि विनाशकारी शक्ति कौन सी है। अतः हिटलर की तरह से व्यक्ति ऐसे किसी विचार से बाधित हो सकता है।

हिटलर के मस्तिष्क में एक धारणा घर कर गई कि वह सम्राट हैं और उसे यहूदियों को नष्ट करने का पूर्ण अधिकार है। वह यहूदियों का वध करने में लगा रहा। उसने बहुत से लोगों की जाने ली, परन्तु अन्त में क्या हुआ? वह श्री गणेश के प्रतीक स्वास्तिक का उपयोग करता था और इस स्वास्तिक को लगाकर युद्ध कर रहा था। सौभाग्य से ऐसा हुआ कि देवी माँ उसके मस्तिष्क में प्रवेश कर गईं जिसके कारण वह भ्रान्ति में खो गया। वह भूल गया कि श्री गणेश की शक्ति का किस प्रकार उपयोग करना है। वह स्वास्तिक का स्टेंसिल उपयोग करता था। उस स्टेंसिल से दूसरी बार जब स्वास्तिक छापा गया तो स्वास्तिक उल्टा छप गया। उल्टा स्वास्तिक विनाशकारी होता है। उसने उल्टा स्वास्तिक छाप लिया और परिणामस्वरूप नष्ट हो गया। तो यह देवी का भ्रान्ति पक्ष है कि वे आपके मस्तिष्क में प्रवेश करके इसे भ्रान्ति और भ्रमों से भर देती हैं, आप गलतियाँ करते हैं। यदि ऐसा न हुआ होता तो हिटलर ने अनगिनत लोगों को नष्ट कर दिया होता। अतः मनुष्यों की हत्या करने वाले लोगों के मस्तिष्क में वे प्रवेश कर जाती हैं और उसमें ऐसी धारणा भर देती हैं कि वे लोग स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि लिखा गया है

'भ्रान्ति रूपेण संस्थिता'। वे हमारे अन्दर इस प्रकार की भ्रान्ति उत्पन्न करती हैं कि कष्ट–कर तथा विनाशकारी व्यक्ति स्वयं ही नष्ट हो जाता है। सभी प्रकार के भ्रम वे मानव मस्तिष्क में भर सकती हैं और इसी के कारण विश्व के बहुत से लोग आज जीवित हैं, अन्यथा बहुत लोग नष्ट हो गए होते और पृथ्वी पर शैतान का साम्राज्य होता।

परन्तु यही देवी हमारी रक्षा करती हैं। प्रतीकात्मक रूप से कहा गया है कि देवी ने बहुत से राक्षसों का वध किया। वास्तव में उन्होंने बहुत से राक्षस मारे। प्रतीकात्मक रूप से नहीं। पहले राक्षस हुआ करते थे और आज भी आसुरी लोग हैं। ये सब लोग केवल मारे ही नहीं जाएंगें सदा के लिए समाप्त कर दिए जाएंगें। मैने रूस में देखा है और अन्य बहुत से देशों में भी देखा हैं। किसी समय जिन लोगों को परमात्मा सम माना जाता था वे सदा के लिए समाप्त हो गए। ऐसा सभी देशों में घटित हुआ। जहाँ भी गलत प्रकार के लोग हैं उनका अनावरण हुआ और अब लोग उनके फोटो तक को देखना नहीं चाहते। उनके पुतले फेंक दिए गए हैं। ये सब घटित होता है क्योंकि देवी उनके लिए भ्रान्ति की सृष्टि करती हैं। मान लो कोई व्यक्ति बहुत महत्वाकांक्षी है और सभी लोगों को नष्ट करना चाहता है तो विवेकशील लोग तो उसे समझ जाएंगे परन्तु विवेकहीन लोग उसके भक्त बनकर नष्ट हो जाएंगे। इस प्रकार से हजारों लोग नष्ट हो गए क्योंकि वे सच्चाई को न देख सके, ये न समझ सके कि ठीक क्या है गलत क्या है। ठीक और गलत का ये विचार भी देवी पूरी तरह से भ्रमित कर देती हैं ताकि गलत तरह के लोग नष्ट हो जाएं। हम नहीं चाहते कि ऐसे लोग पृथ्वी पर हों। जो लोग कष्टदायी हैं, विनाशकारी है, विवादप्रिय हैं, ऐसे सभी लोग नष्ट हो जाएंगे, अपने आप ही वे नष्ट हो जाएंगे। आवश्यक नहीं है कि देवी उन्हें नष्ट करें। बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं कि देवी को 'भ्रान्ति रूपेण संस्थिता' क्यों कहा गया है। उनका आस्तित्व भ्रान्ति रूप में क्या है? इसके कारण आपकी सदसद् विवेक शक्ति को चुनौती मिलती है। परन्तु यदि आप सहजयोगी हैं, सच्चे सहजयोगी हैं, तो आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर महसूस कर सकते है कि जिस व्यक्ति का अनुसरण आप कर रहे हैं वह अच्छा व्यक्ति है या बुरा और उसके विषय में आप अन्य लोगों को भी बता सकते हैं। गलत गुरुओं के कारण बहुत से साधक नष्ट हो गए हैं क्योंकि उन्होंने गलत गुरुओं का अनुसरण किया। ये गुरु तो अत्यन्त धूर्त थे और इनके अनुयायी भी मूर्ख थे। मेरी समझ में नहीं आता कि क्यों इन्होंने इनका अनुसरण किया। अत्यन्त स्पष्ट बात थी कि ये तथाकथित गुरु तो रोल्स रायस गाड़ियों के पीछे थे और मैने अनुयायियों को पागलों की तरह से इनके पीछे भागते देखा है।

आज भी ऐसे लोग हैं जो गलत गुरुओं का अनुसरण कर रहे हैं। उनमें से एक ऐसा

गुरु है जिसे विदेशों में रहने वाले भारतीय लोग बहुत पसन्द करते हैं। वो इस बाबाजी का अनुसरण करते हैं और ये बाबाजी इनसे धन लेते हैं, इनका धन चुराते हैं, गहने चुराते हैं। सभी प्रकार के कुक्रत्य करते हैं फिर भी लोग उसका अनुसरण किए चले जा रहे हैं और कहते हैं कि जो वो कर रहे हैं, ठीक है। ये बाबाजी नष्ट हो जाएंगे। परन्तु ऐसे बाबाजियों का एक लाभ भी है कि पृथ्वी पर बहुत से मूर्ख लोग हैं जो विवेकहीन हैं और इनके पीछे लगकर वो समाप्त हो जाते हैं, उन्हें ह्रदयाघात हो जाता है, कैंसर रोग हो जाता है। सभी प्रकार के कष्ट भुगतकर वे समाप्त हो जाते हैं। परन्तु हैरानी की बात है कि लोग ऐसे बाबाजी या गुरुजी से किसी भी महिला को नष्ट होते हुए देखते हैं फिर भी उनका अनुसरण किए चले जाते हैं। लोग ये भी नहीं देखते कि फलां व्यक्ति बर्बाद हो गया था, बिल्कुल वैसे ही जैसे शराबखाने से निकलते हुए लड़खड़ाते हुए शराबी को देखकर भी लोग वहाँ जाने के लिए लाइन लगाकर खड़े रहते हैं ताकि वे भी वहाँ जाकर शराब पीएं और बाहर आकर औन्धे मुँह गिरें। उनके पास बिल्कुल भी मस्तिष्क नहीं है। किसी शराबी को जब औन्धे मुंह गिरते हुए वे देखते हैं तो शराबखाने में जाने की इच्छा क्यों होनी चाहिए? परन्तु वे ऐसा करते हैं जैसा मैंने बताया। अब अन्तिम निर्णय का समय है। इसमें आपको देखना चाहिए कि गलत तरीके अपनाने वाले या गलत गुरुओं का अनुसरण करने वाले लोगों का क्या हाल हुआ। यदि आप ये बात देखना चाहें तो ये अत्यन्त स्पष्ट है। किस प्रकार वे स्वयं को नष्ट कर रहे हैं? वो कहते हैं, जो भी हो, हमें मरना तो है ही तो क्यों न शराबखाने जाएं? मेरी समझ में नहीं आता कि ये सब क्या है? वे इस प्रकार के तर्क देते हैं, इतने मूर्ख हैं मानो उन में मस्तिष्क नाम की चीज़ ही न हो। उनमें इतना भी विवेक नहीं है कि देख सकें कि एक व्यक्ति शराबखाने से गया था और बाहर आकर पड़ा हुआ है, उसे उठाने वाला भी कोई नहीं है फिर भी वो शराबखाने जाएंगे। फिर वो कहते है कि ईसा मसीह ने शराब बनाई और लोगों को दी। नहीं, वो ऐसा नहीं कर सकते। वे पूर्ण हैं उन्होंने किसी को शराब नही दी। उन्होंने तो अंगूरों का रस दिया था। किस प्रकार एक क्षण में कोई शराब बना सकता है? परन्तु अपनी मूर्ख बुद्धि से लोग इस बात पर कुतर्क किए चले जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं।

कलियुग में विध्वंस बहुत तेजी से कार्यान्वित हो रहा है, क्यों? क्योंकि लोगों ने सद–सद विवेक बुद्धि खो दी है। लोग अब विवेकशील नहीं हैं और विवेकहीनता फैंशन बन गई है। मैंने कहा, वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? श्री माताजी ये फैशन है। कोई भी बेतुकी चीज़ फैशन बन जाती है। किसी भी मूर्खतापूर्ण चीज़ को अपनाकर लोग कष्ट में फँस जाते हैं। आजकल मैंने देखा है, विशेषरूप से

अमेरिका में, कि महिलाएं अपने फ्रॉक के नाम पर केवल पट्टियाँ ओढ़ना चाहती है। केवल पट्टियाँ और उनके दोनों चक्र उघड़े रहते हैं। ये दोनों चक्र बहुत महत्वपूर्ण हैं। **व्यक्ति को बिना बाजू के वस्त्र नहीं पहनने चाहिए। ये चक्र सदैव ढके हुए होने चाहिए। आज्ञा चक्र के अतिरिक्त हम सभी चक्र ढक कर रखते हैं और आज्ञा चक्र को भी कुमकुम से ढकते हैं।** इन चक्रों के नंगे होने से कितने रोग हो सकते हैं? इसके कारण व्यक्ति को नाली व्रण (Sinus) हो सकता है, आँखों के रोग हो सकते हैं। दोनों हाथों का पक्षघात हो सकता है और पार्किन्सन (कंपन रोग) हो सकता हैं। सभी प्रकार के रोग हो सकते है क्योंकि ये दोनों बहुत महत्वपूर्ण चक्र हैं। **दाईं ओर को श्री चक्र है और बाईं ओर को ललिता चक्र। कभी भी आपको ये चक्र नंगे नहीं रखने चाहिए। घुटनों को भी नंगा नहीं रखा जाना चाहिए।** परन्तु आजकल घुटनों का प्रदर्शन करना फैशन है। इसका कारण मेरी समझ में नहीं आता। घुटनों में क्या है? क्यों लोग महिलाओं के घुटने देखना चाहते है? कहने का अभिप्राय ये है इसमें तनिक सा भी विवेक नहीं है। विवेक हीनता है। पहले तो मैं यह बात समझ ही न पाती थी परन्तु अब मुझे समझ आया है कि महिलाएं पुरुषों को आकर्षित करने के लिए ऐसा करती हैं। घुटनों से आकर्षित होने वाले पुरुष कैसे पुरुष होंगे? ऐसे पुरुष मेरी समझ में नहीं आते। पुरुष पूरे वस्त्र पहनते हैं और महिलाएं अपनी नाभि और दोनों चक्रों का प्रदर्शन करती हैं और ये फैशन है! कल सिर मुंडवाने का फैशन शुरू हो जाऐगा तो भेड़ों के झुण्ड की तरह से सभी लोग सिर मुंडवा लेंगे। सभी कुछ सामूहिक रूप से होता है इसलिए फैशन भी सामूहिक रूप से किए जाते हैं और इस प्रकार लोगों का विवेक पूर्णतः समाप्त हो जाता है। ये सब चीजें आप रोज़ देखते हैं। परन्तु आपकी समझ में नहीं आतीं। विदेशों में रहने वाली भारतीय महिलाओं को मैंने देखा है कि वो भी फैशन की नकल करती हैं और अपने चक्रों को नंगा रखकर कठिनाई में फँस जाती हैं। कितनी हैरानी की बात है क्योंकि भारत में तो इस प्रकार की महिलाओं को देखना अशकुन माना जाता है। परन्तु विदेशों में आकर महिलाओं ने अपने शरीर का प्रदर्शन करने की ये महान कला भी सीख ली है।

इसका दूसरा पक्ष इससे भी कहीं गम्भीर है, जैसे चेहरे को ढके रखना। अवश्य मोहम्मद साहब ने आधुनिक समय के विषय में सोचा होगा। उन्होंने कहा था कि अपना चेहरा, शरीर और अपने आप को पूरी तरह से ढ़क कर रखो ताकि महिला होने के नाते आप सुरक्षित रहें और आपसे आकर्षित न होकर पुरुष भी बचे रहें। मेरे कहने का अभिप्राय ये है कि ये अति की सीमा तक जाना है। परन्तु इसे इसी प्रकार होना था। वास्तव में ऐसा

हुआ नहीं। मैंने देखा है कि अपने पतियों के सामने मुस्लिम महिलाएं कितनी मूर्ख हैं और किस प्रकार उन्हें आकर्षित करने में वे लगी रहती हैं तथा किस प्रकार उनके पति उन्हें नियंत्रित करते हैं। यह अति है। तो यह भ्रान्ति है, माँ अम्बा द्वारा सृजित। वे भ्रान्ति का सृजन करती हैं और इस भ्रान्ति की स्थिति में लोग पगला जाते हैं। उनकी समझ में नहीं आता कि वे पगला रहे हैं। एक कहानी है। एक पिता ने अपने बेटे से कहा कि जिस रास्ते से लोग जा रहे हों उन्हीं के पीछे चलना। बेटे ने बहुत से लोगों को एक रास्ते से जाते हुए देखा। वह भी उनके पीछे चल पड़ा। वह कहाँ पहुँचा? शमशान घाट। अनुसरण का अर्थ ये नहीं है कि आप अपने मस्तिष्क का उपयोग छोड़ दें।

आप देखेंगे कि ज्यादातर लोग कुछ न कुछ गलत ही कर रहे हैं। उनके पास न तो अपना मस्तिष्क है और न व्यक्तित्व। वो तो बस लोगों के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं, ये भी नहीं देखते कि उन्होंने क्या प्राप्त किया है, क्या पाया है। लोगों का अनुसरण करने का क्या लाभ है? कोई चीज़ जब आप खरीदते हैं तब भी आप देखते हैं कि इसकी गुणवत्ता क्या है और जिस व्यक्ति ने इसे पहले खरीदा था वह इसका किस प्रकार उपयोग कर रहा है। आप सभी कुछ जानना चाहते हैं। परन्तु जब फैशन की बात आती है तो कोई भी कुछ सोचना नहीं चाहता और लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए फैशन बनते चले जाते हैं। मुझे लगता है कि ये सब आसुरी शक्तियों की देन है ताकि मानव नष्ट हो जाएं। लोग कहते हैं कि ये डिज़ाइनर्स (Designers) का बनाया हुआ है। मैं कहती हूँ ये डिजाइनर कहो या और कुछ परन्तु यह आक्रामक तथा नकारात्मक शक्ति है जो आप पर हावी हो रही है। आपके बाईं ओर विराजित माँ (श्री अम्बा) इससे आपकी रक्षा करती हैं। उनकी सात मर्यादाएं हैं। वो नहीं चाहतीं कि आप इन सीमाओं को लाँघें। परन्तु मनुष्य कहता है, "क्यों नहीं, क्यों न मैं इन सीमाओं को लांघू"? अन्य लोग यदि नर्क में गए हैं तो मैं भी नर्क में जाऊंगा। ठीक है। ये आप ही के लिए बन रहा है, आगे बढ़ो। यही कारण हैं कि वे भ्रान्ति का सृजन करती हैं क्योंकि कुछ लोगों ने इस सृजन से, इस उत्क्रान्ति प्रक्रिया से बाहर जाना होता है। उन्हें जाने दो। अन्तिम निर्णय हैं। इसी प्रकार आपको आँका जाएगा।

आपकी मूर्खता से आपको आँका जाएगा। बहुत से सहजयोगियों को मैने छोटी–छोटी सी चीज़ों के विषय में बताया, जैसे रात को अपने सिर में तेल मालिश करें और सुबह सिर धो दें। पर वे ऐसा नहीं करते। ऐसा करके आप स्वयं को आराम पहुँचाते हैं। मालिश बहुत अच्छी चीज़ है इससे आपको नींद अच्छी आती है हम सबको इसकी आवश्यकता है, विशेष रूप से ठण्डी जलवायु

में इसकी बहुत आवश्यकता है। परन्तु ये लोग तेल मालिश नहीं करेंगे। **वे अपनी उपेक्षा करते हैं क्योंकि वो सोचते हैं कि वे सहजयोगी हैं, वे सुरक्षित है, श्रीमाताजी उनकी रक्षा कर सकती हैं। यह बात नहीं है, जहाँ तक शरीर का सम्बन्ध है, मस्तिष्क का सम्बन्ध है आपको स्वयं देखभाल करनी होगी। आप ही अपने शरीर के लिए जिम्मेदार हैं।** सहजयोग से आप समझ जाएंगे कि आपमें कहाँ दोष है और आप क्या गलत कर रहे हैं। मैं आपको सभी महत्वपूर्ण बातें बता देती हूँ। आपको चाहिए कि आप उन्हें आजमाएं। आप आत्मसाक्षात्कारी लोग हैं, आत्मा हैं, आप चैतन्य लहरियाँ महसूस कर सकते है कि किसी में क्या दोष है। प्रायः मैंने देखा है, आजकल ऐसा कम होता है, कि लोग केवल मुझे भूतबाधित लोगों के विषय में सूचना देते हैं। श्रीमाताजी फलाँ–फलाँ व्यक्ति भूतबाधित हैं, श्री माताजी उस व्यक्ति में यह बाधा है। मैंने कहा, उन्हें बाहर फेंक दो बस। इसके बारे में मुझे क्यों परेशान करते हो? सहजयोग से निकलने के बाद वे महसूस करेंगे और कहेंगे कि श्रीमाताजी हम सहजयोग से निकलना नहीं चाहते। क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि अब वे सच्चाई एवं सुरक्षा से पूरी तरह दूर हो गए हैं। इसलिए वे वापिस आना चाहते हैं। जो वापिस आ सकते हैं वो आ जाएं परन्तु जिन्हें नहीं आना चाहिए उन्हें नहीं आना चाहिए। ये लोग इतने पागल हैं कि वापिस आकर भी पागलपन का फैशन बना देंगे और अन्य लोग भी उनसे प्रभावित हो जाएंगे। **अतः अन्य लोगों से प्रभावित होना सहजयोगी की निशानी नहीं है।** सहजयोगी अन्य लोगों को प्रभावित तो कर सकता है परन्तु सहजयोग के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति से प्रभावित कैसे हो सकता है? सहजयोग आपको विवेकशक्ति प्रदान करता है और ये शक्ति प्रदान करने वाली आपकी कुण्डलिनी है। तो यह कुण्डलिनी जो आपकी माँ है, आपकी त्रिकोणाकार अस्थि में विराजमान है, यही आपके अस्तित्व के सारे गुण एवं सौन्दर्य प्रदान करती है। मैं आपको कुण्डलिनी के विषय में इतना बता चुकी हूँ कि और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु ये आपकी बाईं ओर (भावनात्मक असंतुलन) को ठीक करती है।

आदतवश कुछ लोग सदा रोते–बिलखते रहते हैं। जब भी आप उनसे मिले, उनके आँसू बहते नज़र आते हैं। क्या हुआ? श्रीमाताजी ये हो गया, वो हो गया। अपनी तकलीफें और कष्टों आदि को बताने के लिए वे मुझे एक के बाद एक पत्र लिखते हैं अब वे सहजयोगी हैं। अब आप मनोकामना प्रदायी उद्यान (Garden of Eden) (परमानन्द की अवस्था) में पहुँच गए हैं। आप स्वर्ग में हैं। अब क्यों आप महत्वहीन (नारकीय) चीजों के विषय में सोचते हैं, क्यों? क्योंकि अभी तक आपने अपना व्यक्तित्व प्राप्त नहीं किया

है। सहजयोगी होने के नाते **अब आपको अन्य लोगों तथा स्वयं को समझने का विवेक विकसित करना होगा। क्यों आप भौतिक पदार्थों के पीछे दौड़े फिरते है?** ये समझने का प्रयत्न करें कि इसमें कौन सी बडी बात हैं? आप क्यों ऐसा करना चाहते हैं? स्वयं से प्रश्न करें। क्या ये कोई बाधा है या फैशन है या आपकी व्यक्तिगत भावना? मैं आपको ये बताने का प्रयत्न कर रही हूँ कि ये आपकी बाईं ओर (भावनात्मक पक्ष) बहुत रक्षाकारी है। परन्तु यदि आप अपने बाएं भाग के विषय में बहुत अधिक आक्रामक हैं तो आपको एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे गर्त में और अन्ततः नर्क में फेंक दिया जाता है जहाँ आप बहुत कष्ट उठाते हैं। अतः आपको समझना चाहिए। आप में विवेक होना चाहिए और अपनी बाईं ओर की सहायता से आप ये विवेक स्वयं में विकसित कर सकते हैं। विवेक को भली भांति विकसित किया जा सकता है।

अब मान लो कोई तथाकथित सहजयोगी जो अत्यन्त आक्रामक, धनलोलुप और ध ोखेबाज है और आप उसके जाल में फँस जाते हैं हिन्दी में हम इसे चक्कर में फँसना कहते हैं। एक बार जब आप उसके चक्कर में आ जाते हैं तो पतन की ओर बहने लगते हैं। ऐसी स्थिति में भी आपकी बाईं ओर एक सीमा तक आपकी रक्षा करेगी। परन्तु यदि आप इन चक्रों में बहुत अधिक फँस जाते हैं तो यह आपको बाहर फेंक देती है। अब ऐसा समय आ गया है कि आप सबको ये समझना होगा कि आप सहजयोगी हैं और आप पर बहुत बडी जिम्मेदारी है–बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी कि आप वही कार्य करें जो आपका ज्योतित अन्तःकरण आपको कहता है। अपने प्रकाश को अपनाएं। इसकी रोशनी में रहें, अंधेरे में न जाएं, और इस प्रकार आप जान जांएगे कि ठीक व्यक्ति कौन है और गलत कौन है। सहजयोग में भी यह नकारात्मकता कार्य कर सकती है। ये अपना कार्य करती है। **व्यक्ति को अन्य लोगों के बुरे विचारों या बुरे कारनामों में नहीं उलझना चाहिए। आज मैं आप सबको चेतावनी दे रही हूँ। क्योंकि आप सब तो आनन्द लेने के लिए हैं। अपने चित्त की ओर दृष्टि करें कि यह कहाँ जाता है।** बहुत सी सुन्दर चीज़ें हैं। देखें कि पुष्प कितने सुन्दर हैं, देखें कि इन चीज़ों को कितना सुन्दर बनाया गया है। इन्हें देखकर मेरा हृदय खुशी से झूम उठता है। जबकि बहुत से लोग इन्हें देखते तक नहीं। उस दिन मैंने किसी से पूछा कि यहाँ पर पुष्प किसने सजाएं? कौन से पुष्प? मैंने कहा जो वहाँ सजाए गए थे, कौन से? तो मैने फूलों के नाम बताए तो कहने लगे हमने तो उन्हें देखा ही नहीं। आपकी दृष्टि कहाँ थी कि आप फूलों को ही नहीं देख पाए। आपकी दृष्टि इतनी मूर्ख है कि यह सौन्दर्य को ही नहीं देख सकती। सभी प्रकार की बुराइयों में वे फँसे हुए हैं।

देवी को सभी राक्षसों का वध करना होता है। न जाने कितने राक्षसों का वो वध कर चुकी हैं और एक बार फिर वे वापिस आ गए हैं और लोग उनके जाल में फँस रहे हैं। ये सब चल रहा है। ये राक्षस विद्यमान हैं। आपको उन्हें सूक्ष्मतापूर्वक पहचानना होगा और लोगों को बताना होगा कि वे कहाँ जा रहे हैं? वे कहाँ जा रहे है? वह तो राक्षस है। उसके क्या कारनामें हैं? उसने क्या पाया है? अब आपको इस प्रकार खुल्लमखुल्ला बात करनी चाहिए। भगवे कपडे पहने राक्षसों के पास जाने वाले बहुत से लोगों को आप बचा सकते हैं। एक एक करके वे सब नष्ट हो जाएंगे। परन्तु यदि वे लोगों के हृदय में बसे हुए होंगे तो किस प्रकार उन्हें नष्ट किया जाएगा?

अतः आप ही लोगो ने उन्हें बताना है कि ये राक्षस क्या कर रहे हैं। मैं उनकी सब चालाकियों को जानती हूँ परन्तु मानव उनके चक्कर में फँसता ही चला जाता है। आपमें गहन सूझ–बूझ होनी चाहिए। हमेशा प्रश्न करें, क्यों मैं इसकी और आकर्षित हुआ? क्या लाभ है? स्वयं से ये प्रश्न पूछें। आप महसूस करेंगे कि सहजयोग में आने के बाद आपको बहुत लाभ हुआ। तो क्यों अब झूठी धारणाओं को अपनाना है? क्यों झूठी और नकारात्मक चीज़ों के पीछे भागना है? सहजयोगियों को यही कार्य करना है। इसलिए नहीं कि वे केवल अन्य लोगों के प्रति ज़िम्मेदार हैं, वे अपने प्रति भी जिम्मेदार हैं।

देवी के विषय में एक सबसे अच्छी बात जो कही गई है वो ये है कि वे आपको श्रद्धा प्रदान करती हैं। श्रद्धा को अंग्रेजी में हम (Faith) कह सकते हैं। व्यक्ति में उचित या अनुचित दोनों प्रकार की श्रद्धा हो सकती है। परन्तु यदि आप में अन्ध श्रद्धा है तो लोग इसका पूरा लाभ उठाते हैं। फिर भी देवी प्रदत्त श्रद्धा बहुत महत्वपूर्ण है। यह अत्यन्त आनन्ददायी है। श्रद्धा अत्यन्त आनन्ददायक है। अवतरणों के जीवन काल में किसी ने भी उन पर विश्वास नहीं किया। लोगों को उनमें श्रद्धा न थी। उन्होंने ईसा मसीह को क्रूसारोपित कर दिया, किसी ने भी खड़े होकर ये नहीं कहा कि आप इन्हे क्रूसारोपित क्यों कर रहे हैं? किसी ने भी नहीं कहा। किसी में इतनी श्रद्धा न थी कि खड़ा होकर ये बात कह सकता। लोग अपने देश के लिए, अपने धर्म के लिए या मूर्खतापूर्ण चीज़ों के लिए लड़ सकते हैं परन्तु कोई भी ये नहीं कहेगा कि यह व्यक्ति वास्तव में सच्चा है, यह अवतरण है।

कल जो नाटक दिखाया गया उसे देखकर मैं आश्चर्यचकित थी। यद्यपि यह सत्य है फिर भी मैं कहूंगी कि मैं स्वयं का सामना नहीं कर सकती। मैं इतनी विनम्र हूँ कि ऐसी चीज़ को स्वीकार नहीं कर पाती।

यह बहुत ही उत्तम था। ऐसी कृति का सृजन वास्तव में अत्यन्त महान कार्य है। सबसे बड़ी बात तो ये थी कि इंग्लैण्ड के लोगों में नाटक का इतना विवेक है। उनके यहाँ शेक्सपीयर जैसे लोग उत्पन्न हुए। जिस प्रकार से उन्होंने नाटक प्रस्तुत किया मैं हैरान थी। ये नाटक कुशलता की पराकाष्ठा थी। इतनी अधिक पूर्णता इसमें थी कि मैं इसके विषय में एक शब्द भी न कह सकी। जिस सत्य को उन्होंने प्रतिपादित किया, उसे देखकर मैं हैरान थी। **परन्तु यदि आपमें थोड़ा सा भी विवेक है तो मेरे जीवन काल में ही आपमें सन्देह समाप्त हो जाएंगे क्योंकि इतने अधिक चमत्कार घटित हो रहे हैं।**

आज ही कोई मुझे बता रहा था कि किसी व्यक्ति को कैंसर, अल्सर आदि कई रोग थे। सहजयोग में आने के पश्चात् जब वह अस्पताल गई तो पता लगा कि उसे कुछ नहीं है। इस प्रकार के बहुत से चमत्कार हो रहे हैं। सहज से पूर्व ऐसा कभी नहीं हुआ होता। मेरे कुछ फोटो हैं जो अत्यन्त असाधारण हैं। वैज्ञानिक भी इनके बारे में हैरान हैं। जिस प्रकार से फोटो आ रहे हैं, एक फोटो में तो श्री गणेश मेरे पीछे खड़े हुए हैं। वास्तव में आप लोगों को विश्वस्त करने के लिए केवल एक कैमरे ने उन्हें पकड़ा। कोई व्यक्ति यदि विद्यमान न हो, जैसे ईसा मसीह अब नहीं हैं, तो लोग चर्च क्यों जाते हैं? श्री राम नहीं हैं फिर भी क्यों लोग उनकी स्तुति गाए चले जा रहे हैं? श्री कृष्ण नहीं हैं फिर भी क्यों हरे राम, हरे कृष्णा किए जा रहे हैं? अवतरण जब साक्षात् आपके सम्मुख होते हैं तो आप उन्हें स्वीकार नहीं करते। संभवतः इसलिए कि आपको विश्वास नहीं होता कि आप इसके योग्य हैं या हो सकता है कि मानव को समझ पाना बहुत कठिन है। आप जब उनके सम्मुख खड़े हों तो वे विश्वास नहीं करते और आप जब जीवित नहीं होते तो वे आपको मानते हैं, कितनी अजीब बात है! है न? आध्यात्मिकता के इतिहास को यदि आप देखें तो हमेशा से ऐसा चलता रहा है। ज्ञानदेव ने कुछ चमत्कार दिखाए फिर भी केवल थोड़े से विवेकशील एवं बुद्धिमान लोग ही उन्हें समझ पाए और उन पर विश्वास कर पाए। ऐसे लोग संख्या में इतने कम हैं कि परिणामस्वरूप लोगों ने उन्हें क्रूसारोपित कर दिया, मार दिया या उनकी हत्या कर दी। मेरे साथ भी उन्होंने ऐसा ही करने का प्रयत्न किया। परन्तु आप जानते हैं कि इस जीवन में मैं पूर्णावतार के रूप में आई हूँ। कोई मुझे नष्ट नहीं कर सकता। प्रेम, स्नेह और करूणा मेरी शक्तियाँ हैं। परन्तु एक ऐसी शक्ति भी है जो दूसरे लोगों को पूरी तरह से सुधार सकती हैं। अतः आप लोगों का सहजयोग में श्रद्धा न होना आपके खालीपन को दर्शाता है। आपने फोटो देखे हैं, सभी कुछ देखा है, आप चमत्कारों को जानते है, आपके साथ चमत्कार

हुए है और आपको सहजयोग का अनुभव है। इसके बावजूद भी आपकी श्रद्धा अत्यन्त कमजोर है। वे ही (देवी) आपको श्रद्धा प्रदान करती हैं। अतः आपको उनका स्तुति गान करना होगा, उनके चरणों पर गिरना होगा, उनकी पूजा करनी होगी और उनसे याचना करनी होगी कि 'हे, माँ कृपा करके हमें श्रद्धा प्रदान कीजिए'। इस श्रद्धा के साथ आप हैरान होंगे कि ऐसा व्यक्ति, जिसमें इस प्रकार की श्रद्धा है, वह जब मुझसे कहता है कि 'श्री माताजी यह कार्य कर दीजिए' तो वह कार्य हो जाता है, बस हो जाता है। उनको इतना अधिकार प्राप्त है कि वे कुछ भी माँगे तो वह कार्यान्वित हो जाता है। परन्तु पहले आपकी श्रद्धा दृढ़ होनी चाहिए, यह सच्ची होनी चाहिए। श्रद्धा यदि सच्ची है, गहन है तो आप **जो चाहे प्राप्त कर सकते हैं, गलत चीज़ें नहीं अच्छी चीज़ें**। अतः ऐसी श्रद्धा स्वयं में विकसित करने का प्रयत्न करें। यह श्रद्धा आपको ऐसा आनन्द, ऐसी खुशी प्रदान करेगी कि आप समर्पित हो जाऐंगे, सहज में लिप्त हो जाएंगे और फिर सहज से निकलना न चाहेंगे। तो 'श्रद्धा' बाईं ओर का सबसे महान वरदान है। ऐसी 'श्रद्धा' जो पावन है। श्रद्धा का अर्थ है आपके हृदय का विश्वास जो संदेह रहित हो तथा विश्वास के अतिरिक्त कुछ भी न हो। अतः आप लोगों को चाहिए कि स्वयं तथा सहजयोग के प्रति श्रद्धा अपने अन्दर विकसित करें। आपकी श्रद्धा यदि दृढ़ है तो आप बहुत से चमत्कार भी देख पाएंगे। परन्तु चमत्कारों तथा अन्य चीजों के बावजूद भी यदि आप नहीं समझते तो आपकी इच्छा है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

दिवाली पूजा

लॉस एंजलिस 29.10.2000

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम अमरीका में दिवाली पूजा कर रहे हैं। पूरे विश्व के लिए यह महान दिवस हैं। यहाँ लोग धनार्जन करते हैं, कभी-कभी बहुत अधिक धन भी एकत्र कर लेते हैं और कुछ लोग इस धन के कारण पूरी तरह से नष्ट भी हो जाते हैं। दिवाली की बात करते हुए हमें समझना चाहिए कि दिवाली पर इतने दीपक क्यों जलाए जाते हैं? श्री लक्ष्मी जी जो जल में उत्पन्न हुईं और जल में ही जिनका निवास है उनका और दिवाली के प्रकाश का क्या संयोग है? ये संयोग क्यों है? सम्पन्नता के प्रतीक के रूप में, जैसा कि हम जानते हैं वे जल में खड़ी हैं। मानवीय चेतना में ऐसी व्यवस्था है कि वह सम्पन्न हो सकता है। पशु सम्पन्न नहीं हो सकते। सभी की अपनी मर्यादाएं होती है, पेड़ों की भी अपनी मर्यादाएं होती हैं। केवल मानव सम्पन्नता को प्राप्त कर सकता है परन्तु यदि उसमें, मर्यादा विवेक न हो तो यह अत्यन्त विनाशकारी है, पूरे विश्व के लिए विनाशकारी है।

इसीलिए दीपक जलाए जाते हैं कि जिन लोगों पर श्री लक्ष्मीजी का आशीर्वाद है वे स्वयं को ज्योतित करें, उनमें प्रकाश हो, वे अन्य लोगों को भी ज्योतित करें। परन्तु वास्तव में ज्यों ही लोगों को तथा-कथित लक्ष्मी मिलती है, वे पूर्णतः अन्धे हो जाते हैं और भूल जाते है कि लक्ष्मी जी के आशीर्वाद के पीछे क्या है।

सर्वप्रथम हम देखते हैं कि लक्ष्मी जी के प्रतीक महत्व क्या है? मैंने पहले भी आप लोगों को बताया है कि जिस व्यक्ति को लक्ष्मी प्राप्त है उसे उदार होना चाहिए। लक्ष्मीजी का एक हाथ हमेशा देने की मुद्रा में होता है। कोई भी वैभवशाली व्यक्ति यदि कंजूस है तो यह लक्ष्मीजी के सिद्धान्तों के विरूद्ध है। ऐसा कंजूस व्यक्ति कभी भी लक्ष्मीजी के आशीर्वाद का आनन्द नहीं ले सकता और शनैः शनैः वह निर्धन होता चला जाता है। अपने बाएं हाथ से जब आप देना आरम्भ कर देते है तो उसका अर्थ है कि आपने लक्ष्मीजी के आने के लिए द्वार खोल दिए। इसके पश्चात् लक्ष्मीजी की कृपा आती है। लक्ष्मीजी की कृपा का भी एक अन्य पहलू है कि आप अन्य लोगों को सुरक्षा प्रदान

करें। धनवान लोग किसकी सुरक्षा करें? उन लोगों की जो कष्ट में हैं, जिन पर अत्याचार हो रहे हैं तथा अनाथ बच्चों की जिन्हें सहायता की जरूरत है। इन सब चीजों पर ध्यान दिया जाना चाहिए और आश्रित लोगों को सुरक्षा दी जानी चाहिए। ये सारा कार्य दाएं हाथ से किया जाना चाहिए। लक्ष्मीजी का प्रतीक भी ऐसा ही है। आपने देखा होगा कि लक्ष्मीजी के दो ऊपर के हाथों में से एक में गुलाबी रंग का कमल होता है। गुलाबी रंग का कमल यह सुझाता है कि आपके हृदय में प्रेम होना चाहिए। गुलाबी रंग प्रेम एवं करुणा का प्रतीक है। जैसा मैंने पहले भी आपको बताया है कि लक्ष्मी पति का घर ऐसा होना चाहिए जहाँ सभी लोग आमंत्रित हों, वैसे ही जैसे कमल सभी कीट–पतंगों को, यहाँ तक कि कंटीले भँवरे को भी आमंत्रित करता है। भँवरा शाम को कमल के अन्दर सो जाता है और कमल बड़ी ही सावधानी पूर्वक अपनी पंखुड़ियाँ बन्द कर लेता है ताकि भँवरा सुख पूर्वक, बिना किसी कष्ट के सो सके। अतः लक्ष्मी पतियों के घरों में अतिथियों को स्वीकार किया जाना चाहिए चाहे वो जैसे भी हों और देवताओं की तरह से उनका सम्मान किया जाना चाहिए। मैंने देखा है कि गरीब लोग धनवानों की अपेक्षा कहीं अधिक मेहमाननवाज होते हैं। यही बात देशों की भी है। गरीब देश सम्पन्न देशों की अपेक्षा अधिक सत्कारशील हैं। आश्चर्य की बात है कि सम्पन्न देशों के अपने अप्रवासी नियम हैं और अपने देश में आने से मेहमानों तथा लोगों को रोकने के लिए उन्होंने बहुत सी बाधाएं बना रखी हैं। अतः जहाँ तक लक्ष्मीजी के प्रतीक का सम्बन्ध है वे लोग वास्तव में गलत दिशा में जा रहे हैं।

लक्ष्मीजी की एक अन्य विशेषता ये है कि वो कमल पर खड़ी हैं। यह सब उनकी महिमा को दर्शाने के लिए है कि वे सुन्दर कमलों पर खड़ी है परन्तु कमल पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं है, उनमें किसी भी प्रकार का असंतुलन नहीं है, और किसी भी प्रकार की शक्ति का वे उपयोग नहीं करती। परन्तु ये सभी सम्पन्न देश चहुँ ओर अपनी शक्ति का दबाव बनाए रखते हैं। धनवान व्यक्ति बहुत शक्तिशाली बन जाता है। हर चीज़ शक्ति का रूप धारण कर लेती है। वह शक्ति ही उनका धन, शक्ति ही उनका प्रेम बन जाती है। परन्तु इस शक्ति में देवत्व नहीं होता। यह तो आक्रामकता, क्रूरता एवं अभिमान की शक्ति होती है। लक्ष्मी जी के ये सारे प्रतीक अत्यन्त विश्वसनीय हैं। आज जब हम ये कहते हैं कि किसी व्यक्ति या किसी राष्ट्र के पास धन है तो वे वास्तव में उसके बिल्कुल विपरीत होते हैं जो उन्हें होना चाहिए। इसका कारण ये है

कि वे प्रबुद्ध (Enlightened) नहीं हैं। उनके हृदय में प्रकाश होना आवश्यक है, जिस प्रकार दिवाली पर दीपक होते हैं। हृदय में बिना प्रकाश के ये वैभवशाली तथाकथित लक्ष्मीपति मूर्ख बन जाते हैं। यही कारण है कि हृदय में प्रकाश होना आवश्यक है क्योंकि विवेकहीन लक्ष्मीपति तो अन्धा हो जाता है। यह लक्ष्मी आपको इतनी सूझ–बूझ नहीं देती कि आप जान सकें कि धन का अर्थ क्या है? आप धनवान हैं। इसका क्या अर्थ है? इसलिए व्यक्ति के हृदय में प्रकाश होना आवश्यक है। इस दिव्य प्रकाश के बिना आप श्री लक्ष्मीजी के महान प्रतीक को नहीं समझ सकेंगे।

सहजयोग में हम मानते हैं कि लक्ष्मी को महा–लक्ष्मी बनना आवश्यक है। मानव को महामानव बनना होगा। इसका क्या अर्थ है कि उन्हें महालक्ष्मी बनना होगा। महालक्ष्मी ऐसी देवी हैं जो आपको, जो भी कुछ आपके पास उपलब्ध है उसी से, पूर्ण सन्तोष प्रदान करती हैं। प्रायः व्यक्ति ये सोचने लगता है कि मेरे पास पर्याप्त चीज़ें नहीं हैं। मुझे कुछ और प्राप्त करना है। केवल धन, कार्य, टेलिविजन आदि ही नहीं और बहुत कुछ प्राप्त करना है, उससे मुझे वास्तविक संतुष्टि प्राप्त होगी। आप अर्थशास्त्र, का सिद्धान्त जानते हैं– इच्छाओं की कभी पूर्ति नहीं होती। तो आप एक के बाद एक चीज़ खरीदते चले जाते हैं। **परन्तु महालक्ष्मी तत्व जब आपके अन्दर प्रकाशित होता है तो आपको और अधिक प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती। अब आप औरों को देना चाहते हैं और अपनी उदारता का आनन्द लेना चाहते है। यह इस बात का चिन्ह है कि अब आप लक्ष्मी से महालक्ष्मी की ओर चल पड़े हैं। जब तक लक्ष्मी तत्व था तब तक आप अन्धे थे तथा अधिक से अधिक भौतिक पदार्थों की आपको इच्छा थी। इसके समाप्त होने के पश्चात् आपमें प्रकाश आ गया और आप प्रकाशित हो गए।**

ये चारों कार्य–उदारता, सुरक्षा, अतिथि सत्कार तथा करुणा–करने के पश्चात् आप एक अन्य दिशा की ओर चल पड़ते हैं क्योंकि आप जान चुके होते हैं कि किसी चीज़ से इच्छाओं की पूर्ति या सन्तुष्टि नहीं होती। एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी चीज़ के पीछे दौड़ने से भी नहीं। ऐसे लोग जब सामूहिक हो जाते हैं तो अन्य लोगों से धन ऐंठने के लिए वे उपाय निकाल लेते हैं। इसके बहुत से उपाय हैं जैसे मैं जब इटली में थी तो मैंने जूते खरीदने चाहे। मैं एक दुकान पर गई। वहाँ उनके पास एक ही प्रकार के जूते थे। ऐसे जूते मैं नहीं पहनती। कहने लगे इस वर्ष तो यही हैं, केवल इसी प्रकार के, सभी दुकानों पर यही होंगे। मैंने कहा, लोगों में विवेक नहीं है, उनमें प्रकाश का

अभाव है। अगले वर्ष हम दूसरे प्रकार के जूते लाएंगे। जो भी कुछ वहाँ बनाया जाता है वह नया होता है और पिछले वर्ष बनाए गए जूते यदि बच जाएं तो उन्हें कचरे में डाल दिया जाता है। यह बहुत बड़ा व्यापार है। तो इस प्रकार जो व्यापार आरम्भ होता है उससे बहुत से लोग दिवालिया हो जाते हैं और बहुत से अपने गौरव को खोकर अनैतिकता के जाल में फंस जाते हैं।

तो यदि आप लक्ष्मी तत्व को ठीक से रखना भूल जाएंगे तो आप महालक्ष्मी तत्व तक नहीं पहुँच सकेंगे। महालक्ष्मी तत्व में आपको बिल्कुल भिन्न प्रकार का व्यक्तित्व प्राप्त हो सकता है। **आपके हृदय में यदि प्रकाश है तो आप देखने लगते हैं कि केवल धन से ही संतोष प्राप्त नहीं होता और आप परिवर्तित होते चले जाते हैं। सोचते है कि अब हमें क्या करना चाहिए। अपने हृदय के प्रकाश में आप खोज निकालते हैं कि आपको अब महालक्ष्मी तत्व का अनुसरण करना है अन्यथा आप खो जाएंगे। महालक्ष्मी तत्व के विषय में जब आप सोचते हैं तो आप जिज्ञासु बन जाते हैं, जिज्ञासा जिसके द्वारा आप जीवन का सच्चा संतोष प्राप्त कर सकते हैं।** कहने का अभिप्राय है कि अमरीका जैसा देश जहाँ लोगों के पास बहुत धन तथा भौतिक पदार्थ हैं वहाँ भी असंख्य जिज्ञासु हैं। पहली बार जब मैं अमरीका आई थी तो हैरान थी कि महालक्ष्मी तत्व के होते हुए भी लोग न जानते थे कि क्या खोजें? और वे भिन्न कुगुरूओं का अनुसरण करने लगे। मेरे विचार से वो पगला गए थे क्योंकि उनकी समझ में ये न आता था कि वो किसका अनुसरण करें। यही कारण था कि वे कुगुरुओं का अनुसरण करने लगे उनका जो स्वयं लक्ष्मी तत्व के दास थे। ये गुरु लक्ष्मी जी के गुणों के विरोधी थे और यही कारण था कि उनका अनुसरण करने वाले लोग भटक गए। इस देश में बहुत से साधक भटक गए। जिस प्रकार वे गलत गुरुओं का अनुसरण कर रहे थे उससे मुझे बहुत सदमा पहुँचा। मुझे लगा कि कुछ न कुछ होना अत्यन्त आवश्यक है। साधक क्योंकि उल्टी दिशा में चल रहे थे, इसलिए मैं नौ वर्षों तक अमरीका नहीं आई। इसका मुझे खेद है। वो नहीं जानते थे कि साधना किसलिए है? आप क्या खोज रहे हैं। किसी ने आकर कहा, मैं सोलह वर्ष का हूँ और मैं आपको आत्मसाक्षात्कार दे सकता हूँ। मुझे बताया गया कि एक बन्दूक में कुम–कुम भर के उसने बन्दूक दागी और लोगों को लगा कि वे स्वर्ग में पहुँच गए हैं! इतना मूर्खतापूर्ण आचरण! उनकी खोपड़ी में ये बात कैसे आई? मेरी समझ में नहीं आता कि वे इतने मूर्ख कैसे हो गए? मैं इसकी

कल्पना भी नहीं कर सकती। मैं वापिस चली गई और कहा, इन लोगों के लिए मैं कुछ नहीं कर सकती। फिर एक और फैशन शुरू हुआ। किसी पार्टी में जब लोग जाते तो वहाँ बातें होतीं कि एक अन्य गुरु आया है जो कहीं सस्ता है और सस्ते गुरुओं का मुकाबला चल रहा है। मैं कहती कि विश्व के नेता कहलाने वाले इन लोगों की ओर देखों। किस प्रकार वो इस तरह की बातें कर सकते हैं? इस देश में कितने महान लोग हुए हैं आप ये बात जानते हैं। अब्राहम लिंकन, जार्ज वाशिंगटन कैसे व्यक्ति थे? इन सब लोगों ने महा लक्ष्मी तत्व को दर्शाया। परन्तु लोग उनके विषय में नहीं सोचते तथा विश्व को वश में करने के लिए नए–नए उपाय अपना रहे हैं। क्योंकि सत्ता की धारणा उनके मस्तिष्क में समा गई हैं। लोग सोचते है कि पैसे हम भी खरीद सकते हैं। हमारे पास यदि धन है तो हम किसी को भी अपनी अगुलियों पर नचा सकते हैं।

मानव तथा धन के प्रति ये सारा दृष्टिकोण अत्यन्त आसुरी था और इसने उन्हीं के देशों को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। परिवार प्रणाली का क्या हुआ? परिवार की संस्था क्यों नष्ट हो गई? लक्ष्मी तत्व के विषय में गलत धारणाओं के कारण। महिलाओं ने तलाक के माध्यम से बेशुमार धन एकत्र किया। मैं एक महिला से मिली, जिसने आठ बार अपने पतियों को तलाक दिया था और अब मुझे बताया गया है कि अब उसने नवें पति को भी तलाक दे दिया है। वह बहुत धनवान हो गई हैं। परन्तु अपने इस कारनामें से वह लज्जित नहीं है और सभी महिलाओं को बताती फिर रही है कि तलाक ले लो। ये बहुत अच्छा तरीका है। अमरीका आने का ये बहुत बड़ा लाभ है। तो समस्या मानव के हृदय में प्रकाश का न होना है। यदि वे धन और भौतिक पदार्थों के पीछे दौड़ते रहे तो निःसन्देह उन्हें नर्क में जाना होगा और वह सभी कुछ करना होगा जो विश्व के इतिहास में कभी नहीं किया गया। मूर्खता पूर्ण कार्य जो वे करती हैं उनके विषय में आपको बताने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है।

इसके बाद नशे, शराब आदि चीज़ों की आसुरी शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ। कहने का अभिप्राय है कि इतना अन्धापन, इतनी मूर्खता जिसे आप समझ ही नहीं सकते, मानों धनार्जन की उल्टी–सीधी गतिविधियों ने उनके मस्तिष्क को चौपट कर डाला हो। मृत्यु के समय पहनने के लिए मैंने लोगों को सूट और कपड़े छाँटते हुए देखा है। कितना अजीब लगता है। कुत्ते के मरने पर भी लोग लम्बे–चौड़े प्रबन्ध करते हैं। अपने अन्तिम संस्कार के

लिए अपनी पसन्द के ताबूत (Coffin) भी लोग खोजते हैं। तो धन के साथ एक अन्य समस्या का आरम्भ हुआ। ये समस्या है चयन की। आपकी क्या पसन्द है? और लोग पसन्द से खिलवाड़ करने लगे। आपको बेवकूफ बनाकर लोग आपको ये समझा सकते हैं कि आपके लिए सर्वोत्तम क्या है। मैं नहीं जानती क्यों? परन्तु अधिकतर धनवान लोग यदि बहुत अनैतिक नहीं हैं तो भी मूर्ख तो हैं ही, एकदम मूर्ख। कोई भी उन्हें बेवकूफ बना सकता है। परमात्मा जानता है कि ऐसी कौन सी विशेषता है कि धनवान लोग अत्यन्त धूर्त, अनैतिक एवं आत्मविनाशक हो सकते हैं। परन्तु प्रायः वे मूर्ख होते हैं। जिस प्रकार वे बात करते हैं, आप समझ नहीं पाते कि आप अपनी दृष्टि कहाँ रखें। चीज़ों के बारे में जो भी कुछ वो बताते हैं वो आपकी समझ में नहीं आता। इस प्रकार पूरा देश मूर्खों तथा धूर्तों का बन जाता है और आप की समझ में नहीं आता कि किस प्रकार उनसे व्यवहार करें और किस प्रकार उनसे उत्क्रान्ति की बात करें। इस लक्ष्मी तत्व को एक उच्च तत्व, एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व या, हम कह सकते हैं, महालक्ष्मी तत्व संपन्न होना होगा। ऐसे व्यक्ति को चाहे लोग धोखा दें, चाहे कष्ट दें फिर भी उसमें इन सभी बाधाओं को दूर करने के लिए आन्तरिक शक्तियाँ होती हैं। अतः महालक्ष्मी तत्व स्थापित होना आवश्यक है। आप पूछ सकते हैं कि क्यों? महालक्ष्मी तत्व का क्या लाभ हैं?

महालक्ष्मी तत्व जब आता है तो मनुष्य के अन्दर नवधा–नौ लक्ष्मियों की अभिव्यक्ति होती है। इनमें से एक को हम गृहलक्ष्मी कहते हैं। गृहलक्ष्मी अर्थात गृहस्वामिनी (पत्नी) बहुत अच्छी बन जाती है। हर बात के लिए वह एतराज नहीं करती। वह प्रतिक्रिया नहीं करती फिर भी वह अत्यन्त विवेकशील होती है और अपने सभी बच्चों को सुन्दर ढंग से पालती पोसती है। इसके विपरीत जहाँ महिला गृहलक्ष्मी नहीं है वह पुरुषों की तरह से कार्य करने में ही गौरव महसूस करती है। उसके लिए उसकी नौकरी और बैंकों में जमा पूंजी ही महत्वपूर्ण है। वास्तव में गृह लक्ष्मी की सच्ची जमा पूँजी उसका परिवार और बच्चे होते हैं। महिला में यदि गृहलक्ष्मी तत्व जागृत नहीं है तो वह स्वयं को बहुत महान मानती है और सोचती है कि वह किसी भी पुरुष से मुकाबला कर सकती है। महिलाएं ये नहीं समझतीं कि प्रेम ही उनका महानतम गुण है। ऐसा क्यों है कि श्री लक्ष्मी जी और सभी देवियाँ महिलाएं हैं। इन देवियों की विशेषता क्या है? अपने स्वभाव तथा गुणों का आशीर्वाद लोगों को देना। अतः ये सोचना कि क्योंकि हमारे पास अधिक धन है हम पुरुषों से श्रेष्ठ हैं, बहुत बड़ी मूर्खता है।

चाहे आपके पास पैसा हो फिर भी आपके बच्चे बिगड़ जाऐंगे, आपका परिवार बिगड़ जाएगा। आपका परिवार जब अच्छा होगा तो आप अपने इर्द–गिर्द एक सुन्दर विश्व का सृजन करेंगे और इस प्रकार पूरे विश्व–पूरे ब्रह्माण्ड को अत्यन्त सुन्दर बना देंगे। कुछ भी बलिदान नहीं करना हैं। हर चीज़ का आनन्द लेना है। जैसा मैंने कहा, अपने आतिथ्य का, अपनी उदारता का आप आनन्द लें। इन चीज़ों को जिन्हें आप अभी तक कष्ट मानते हैं इनका आनन्द लें। कम से कम मैं तो सदैव इनका आनन्द लेती हूँ। किसी को अगर मैं कुछ भेंट करूं तो यह मेरे लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद होता है।

मूर्ख लोग सोचते हैं कि उदारता मूर्खता है। परन्तु वास्तव में वे मूर्ख हैं। अतः अपने बच्चों के लिए उपयुक्त घर बनाना आज बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। ये किया जाना चाहिए। पर उनका स्वार्थ आडे आ जाता है। मानव के जीवन में इस प्रकार की बहुत सी बाधाएं हैं। मैं नहीं समझ पाती कि क्यों वह सभी चीज़ों का आनन्द नहीं लेता। अपने स्वार्थ के कारण उनका प्रेम केवल अपने ही बच्चों, अपने ही पतियो, अपनी ही पत्नियों तक सीमित हो जाता है। इस प्रकार अच्छे परिवार का सृजन नहीं हो पाता। मैं विश्व–परिवार की बात कर रही हूँ। हमारे लिए सभी लोग आत्मसाक्षात्कारी हैं और उनके परिवार हमारे परिवार हैं। परन्तु वो बे–सिर–पैर की उड़ाते रहते हैं और समस्याएं खड़ी किए चले जाते हैं।

मैं हैरान हूँ कि सहजयोग में भी ऐसी महिलाएं हैं जो गप्प मारने में ही लगी रहती हैं। गप्प मारना ही उनकी शैली है। मैं क्योंकि लक्ष्मी और महालक्ष्मी की बात कर रही हूँ इसलिए मुझे महिलाओं को चेतावनी देनी है क्योंकि महिलाओं ने ही महान तत्वों, लक्ष्मी और महालक्ष्मी के महान प्रतीकों का सृजन करना है। गप्प मारना आज भी सहजयोग में एक आम बीमारी है। मैंने देखा है कि जहाँ भी पाँच–छः सहजयोगिनियाँ मिलती हैं तो वह बातें किए चली जाती हैं। ये नहीं जानती कि वो क्या बात करती हैं। सहजयोग के विषय में तो वे कभी बात नहीं करतीं। वे केवल अन्य लोगों के दोषों के बारे में बात करती हैं। गलत व्यक्ति कौन है? ये सब गप्पबाजी है। **इस गप्पबाजी ने, सामूहिकता में हमारे लिए बड़ी–बड़ी समस्याएं खड़ी कर दी हैं। अतः मेरा सर्वोत्तम सुझाव ये है कि चुप रहें। वे जब मेरे घर पर आती हैं तो भी बातें करती हैं। उनमें इतना विवेक नहीं है कि हमें चुप रहना चाहिए। आन्तरिक मौन के बिना आप दिव्य शीतल चैतन्य लहरियों का**

आनन्द नहीं ले सकते। गप्पे मारते चले जाना सहजयोग में विकसित व्यक्ति का चिन्ह् नहीं है। इसलिए पहली चीज ये है कि महिलाओं को कहीं अधिक करुणामय, सहनशील तथा आनन्ददायी होना पड़ेगा। किसी भी व्यक्ति से आप मिलें तो वे कहने लगते है कि फलाँ व्यक्ति में ये कमी है, फलाँ व्यक्ति में ये कमी है। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु लोग आकर आपको सभी प्रकार की बुरी खबरें सुनाते हैं। बुरी खबरें सुनाने में उन्हें आनन्द आता है। वो सोचते हैं कि वो बहुत महत्वपूर्ण है और ऐसा सोचने वाले लोग आपके लिए अत्यन्त खतरनाक हो सकते हैं। मैं सोचती हूँ कि महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक सहजयोग के मूल्यों को समझना चाहिए क्योंकि उनके बच्चे भी इससे जुड़े हुए हैं और उनके परिवार सहजयोग की ही एक इकाई हैं। मैं ये सब इसलिए कह रही हूँ कि अब मैं ये देख रही हूँ कि सहजयोग में महिलाएं प्रायः आवश्यक स्तर तक नहीं होती। वे बहुत ज्यादा गप्प मारती हैं। उन्हें मौन अपनाना चाहिए। पूर्ण मौन, कुछ भी नहीं बोलना चाहिए। **बहुत ज्यादा प्रभावशाली और महान कार्य करने वाले लोग सदैव मौन रहते हैं। वे फालतू नहीं बोलते। मैंने देखा है कि वो आकर मुझसे मिलते भी नहीं, वो पीछे जाकर बैठते हैं।** परन्तु जो महिलाएं स्वयं को विशेष समझती है वही अत्यन्त भयानक होती हैं।

अतः जिन महिलाओं के कन्धों पर लक्ष्मी की शक्ति पड़ती है उन्हें वास्तव में महालक्ष्मियां होना चाहिए। यह सभी सहजयोगिनियों के लिए चुनौती है कि वे सदाचरण करें और विश्व की अन्य महिलाओं से महान बनें। हमारे यहाँ बहुत ही अच्छी, बहुत महान सहजयोगिनियाँ है। इसमें कोई सन्देह नहीं। उनकी शैली बिल्कुल भिन्न है और वो इस प्रकार चीज़ों को कार्यान्वित कर रही है जो अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। वे केवल सहजयोग के लिए कार्य करती हैं। अपने निजी सम्बन्धों और निजी महत्व की उन्हें कोई चिन्ता नहीं है। हर तरह से वे सहजयोग की सहायता करना चाहती हैं।

इसके अतिरिक्त एक अन्य लक्ष्मी है। जो गजलक्ष्मी कहलाती हैं–गज अर्थात हाथी। हाथी का गुण ये है कि वह एक विशेष चाल से चलता है। वह मस्त अन्दाज में चलता है। मैंने ऐसे लोगों को देखा है, विशेष रूप से महिलाओं को, जो घोड़े की तरह से चलती हैं। वास्तव में घोड़े की तरह से। एक बार नृत्य के एक गुरु ने मुझसे पूछा कि श्रीमाताजी क्या मैं एक नृत्य विद्यालय शुरु कर दूं? मैंने कहा,

ये बहुत अच्छी बात होगी परन्तु क्या आप वास्तव में इन्हें नृत्य करना सिखा पाओगे या ये घोड़े की तरह से सरपट दौड़ती रहेंगी? वह पूछने लगीं, क्यों? मैंने कहा, "क्योंकि मैंने देखा है यहाँ पर महिलाएं घोड़े की तरह से चलती हैं। घोड़े की तरह से चलने वाली महिलाएं किस प्रकार नृत्य कर सकती हैं? विशेष रूप से भारतीय नृत्य जो बहुत कठिन होता है।

अब हमने देखना है कि हमारी चाल कैसी है? हम चलते कैसे हैं? आप हाथी की तरह से चलती हैं या घोड़े की तरह से। पुरुषों को हाथी की तरह से नहीं चलना चाहिए उन्हें घोड़े की तरह से चलना चाहिए। सबसे बुरी बात तो ये हो गई है कि पुरुष स्त्रियों जैसे वस्त्र पहनते है और स्त्रियाँ पुरुषों जैसे। क्या किया जाए? इस प्रकार का विवेकहीन परिवर्तन क्यों हुआ? क्यों लोग ऐसी चीज़ें अपना लेते हैं? पुरुष जब पुरुष हैं तो स्त्रियों जैसा और महिलाओं को पुरुषों जैसा बनने का क्या लाभ हैं? कारण ये हैं कि ये लोग परिवर्तन चाहते हैं। किसी भी प्रकार का परिवर्तन उनके लिए महत्वपूर्ण है। वो अपने वस्त्रों में परिवर्तन चाहते हैं, अपने घरों में परिवर्तन चाहते हैं। यहाँ तक कि अपना यौन परिवर्तन भी चाहते हैं। **क्यों नहीं वे आत्मसाक्षात्कार द्वारा अपने पूर्ण अस्तित्व को परिवर्तित कर लेते।** ये समझ लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हम परिवर्तित हो चुके हैं और सहजयोग में हमारा अपना ही गौरव होना चाहिए कि हम किस प्रकार का आचरण करते हैं, किस प्रकार कार्य करते हैं, किस प्रकार चलते हैं? मेरा अनुभव है कि जब एक बार लोग जब सहजयोग में आ जाते हैं तो वे बहुत सुन्दर बन जाते हैं और शनैः–शनैः फूलों सम खिलने लगते हैं। प्रेम एवं करुणा की सुगन्ध उनसे आती है। **परन्तु कुछ ऐसे लोग भी हैं जो नहीं जानते कि उन्नत किस प्रकार होना है? उनका अपना ही एक तुच्छ दायरा होता है, जिसमें वे रहते हैं और उसी में रहकर वे निष्क्रिय हो जाते हैं और बौने बन जाते हैं। ऐसे सहजयोगियों को अन्ततः सहजयोग छोड़ना पड़ता है।** अतः सभी सहजयोगियों की ये जिम्मेदारी कि वे देखें कि उनका मस्तिष्क कहाँ तक जा सकता है? वे कहाँ जा रहे है, क्या कर रहे हैं? किस प्रकार वे सहजयोगी का पद प्राप्त कर रहे हैं।

सहजयोग में लक्ष्मियों तथा लक्ष्मी–पतियों को अन्य धनवान लोगों से भिन्न होना होगा। महालक्ष्मी तत्व से आपको अत्यन्त परिपक्व, संतुलित, स्नेह एवं प्रेममय स्वभाव प्राप्त होना चाहिए। इसकी प्राप्ति यदि आपको नहीं होती तो समझ लेना चाहिए कि कुछ कमी है। **सहजयोग**

में आप अपनी उत्क्रान्ति के अतिरिक्त कोई अन्य चीज़ प्राप्त करने के लिए नहीं आए तथा उत्थान की उस अवस्था को बनाए रखने के लिए आपको सूझ–बूझ प्राप्त करनी होगा कि अन्य लोगों के सम्बन्ध में आपका व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए उन लोगों के मुकाबले जो अभी तक खोज रहे हैं और अन्धकार में हैं।

हमें सार्वभौमिक (जन–जन के लिए) बन्धन मुक्ति प्राप्त करनी है। यही मेरा स्वप्न है। उस दिन हम गिन रहे थे कि मैंने कितनी परियोजनाएं (Projects) आरम्भ किए हैं। पैंतीस परियोजनाएं हमने गिनी जो भारत तथा अन्य देशों में आरम्भ हो चुकी हैं। ये सब मनुष्य को बन्धनमुक्त करने के लिए हैं। सहजयोग में कार्य करने के लिए आपको निर्लिप्त होना पड़ता है। **निर्लिप्सा महालक्ष्मी का गुण है। ऐसा व्यक्ति पूर्णतः निर्लिप्त होता है। भौतिक पदार्थों के मोह में नहीं फँसा रहता। परन्तु इसका अर्थ ये भी नहीं है कि व्यक्ति सन्यास लेकर घर–बाहर और परिवार को त्यागकर चला जाए। ये निर्लिप्सा नहीं पलायन है। निर्लिप्सा का अर्थ है कि आपके पास सभी कुछ हो फिर भी आप निर्लिप्त हों अर्थात इससे अपने लाभ के विषय में ही न सोचें।**

आप यदि अन्त–अवलोकन करें तो ये सभी चीज़ें घटित होना आसान हैं। अन्त–अवलोकन ही ध्यान धारणा करने का सर्वोत्तम मार्ग है। पहले अन्त–अवलोकन और फिर ध्यान धारणा कीजिए। तब आपका उत्थान होगा और अपनी आत्मा के आनन्द से आप इस प्रकार आनन्दित होंगे कि तुच्छ महत्वहीन चीज़ों को अपनाएंगे ही नहीं। सहजयोग में आप अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति बन जाएंगे और ऐसे अद्भुत कार्य करेंगे कि लोग आश्चर्य चकित हो जाएंगे कि एक सर्वसाधारण व्यक्ति किस प्रकार ऐसे कार्य कर सकता है! किस प्रकार यह सब कुछ कार्यान्वित करता है? मैंने आपको पहले भी बताया है कि आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् आप अत्यन्त सृजनात्मक हो जाते हैं, हर चीज़ में सृजनात्मक। विशेष रूप से अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने में तथा अपनी कला, संगीत, काव्य, नाटक, लेखन आदि कार्यों में भी आप सृजनात्मक हो जाएंगे। बहुत से मामलों में मैंने देखा है कि जो लोग कभी मंच पर नहीं चढ़े थे उन्होंने अत्यन्त प्रेरक भाषण दिए। सृजनात्मकता अन्य लोगों के लिए प्रेरणा बन जाती है। अब आप को देखकर लोग प्रेरित होते हैं। अब आप प्रकाश से छुपकर पीछे नहीं बैठते, बिना किसी अहम् के, बिना किसी आक्रामकता के, पूर्ण विनम्रता के साथ आप आगे आते हैं और लोगों को अत्यन्त

सुखद अहसास देते हैं और अपनी सामूहिक चेतना के माध्यम से अपनी तथा अन्य लोगों की अत्यन्त सुन्दर छवि प्रस्तुत करते हैं। बहुत से लोगों ने सामूहिक चेतना के बारे में बातचीत की है। **उस दिन कई वैज्ञानिकों और दार्शनिकों ने भी सामूहिक चेतना की बात की। परन्तु आपको यह प्राप्त हो चुकी है। आपको सामूहिक चेतना का अनुभव प्राप्त हो चुका है। इसके बावजूद भी यदि आप सहजयोग में उन्नति नहीं कर पा रहे हैं तो इसका अर्थ ये है कि आपमें कोई कमी है या आप अब भी अपने सिर पर कोई वज़न लादे घूम रहे है।** आप यदि अब भी मोह में फँसे हुए हैं तो आपके सिर पर वज़न होगा। सहजयोग की सभी चीज़ों में लिप्त होते हुए भी आप निर्लिप्त होते हैं और आपके साथ ऐसे चमत्कार होते हैं, जिनके विषय में आप भलीभांति जानते हैं। इसका वर्णन करने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं। **महालक्ष्मी तत्व से परिपूर्ण व्यक्तित्व पनप उठता है। महालक्ष्मी तत्व ही आपको आपकी साधना के लक्ष्य तक ले जाता हैं और जब आप वास्तविकता एवं सत्य को प्राप्त कर लेते हैं तब आपकी उन्नति होती है। केवल महालक्ष्मी तत्व के कारण ही आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं।** आप ये बात भली–भांति जानते है कि महालक्ष्मी मार्ग से ही आपका उत्थान होता है और आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं। अतः अच्छा सहजयोगी बनने के लिए अपने महालक्ष्मी तत्व की देखभाल करनी होगी।

मैंने देखा है कुछ लोग लोकप्रियता की बहुत चिन्ता करने है। लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए वे ये करेंगे वो करेंगे। ये लोग अभी तक नहीं समझ पाएं हैं कि उनके सभी कार्य घटिया लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए होते हैं। सहजयोग में न तो आपको चुनाव लड़ना है न आपको वोट देने हैं? जिस व्यक्ति में सहजयोग की प्रगल्भता होगी वह **स्वतः ही लोकप्रिय हो जाएगा ये बात आप सब जानते हैं। बातें बनाने की, दूसरों को प्रभावित करने की, दिखावा करने की तथा घटिया लोकप्रियता के पीछे भागने की कोई ज़रूरत नहीं है। ज़रूरत है आन्तरिक उत्थान की।** उसके लिए मैं आपको ये नहीं बता सकती कि क्या करना होगा। पेड़ अपने आप किस प्रकार विकसित होता है? आप लोग सहजयोग के जीवन्त उदाहरण हैं। तो आप स्वयं किस प्रकार उन्नत होंगे? आप स्वयं ही उन्नत होंगे। ये वचन परमेश्वरी का दिया हुआ है, परन्तु उस दिव्य शक्ति को अन्त– अवलोकन, ध्यान–धारणा,

पूर्ण श्रद्धा एवं समर्पण से विकसित होने दें।

उस दिन मैंने आपको 'श्रद्धा' शब्द के विषय में बताया था। यह केवल प्रार्थना और विश्वास करना मात्र नहीं है। श्रद्धा तो आपके हृदय में होनी चाहिए। **समर्पण एवं निष्ठा के माध्यम से प्राप्त आनन्द को श्रद्धा कहा जाना चाहिए।** केवल इसी प्रकार ये कार्यान्वित होगा। आपको स्वयं पर तथा सहजयोग पर विश्वास करना होगा। आपको यह प्राप्त हो चुका है। वे लोग केवल इसकी बात कर रहे थे परन्तु आप इसे प्राप्त कर चुके हैं। आप जानते हैं कि सामूहिक चेतना क्या है। आप ये भी जानते हैं कि आप सामूहिक चेतना में हैं। देखना ये है कि कहाँ तक आप इसमें उतरे हुए हैं। ये बहुत महत्वपूर्ण है। इस थोडे से समय में आवश्यक नहीं कि श्री लक्ष्मी जी के सभी गुणों का मैं वर्णन करूं। परन्तु ये समझने का प्रयत्न करें कि जिस व्यक्ति में लक्ष्मी तत्व होता है उसके अन्दर ये विशेष गुण होने चाहिएं अन्यथा वह लक्ष्मी जी का पुजारी नहीं है। आपके हृदय में जो प्रकाश हुआ है उसी के माध्यम से आज मैं आप लोगों को आशीर्वाद देती हूँ कि लक्ष्मी तत्व को भली भांति समझने का विवेक आपको प्राप्त हो।

परमात्मा आपको धन्य करें।

जैसा मैंने आपको सुझाव दिया है आपको महालक्ष्मी तत्व के महत्व को समझना होगा और इसे कार्यान्वित करना होगा। आपके जीवन से जब लोग देखेंगे कि आप कितने शान्त, भले एवं सामूहिक लोग हैं, केवल तभी सहजयोग फैलेगा, मेरे बताने, प्रचार करने या कार्यान्वित करने से नहीं। मेरे मन में सदैव एक इच्छा थी कि सहजयोगी समाज– सेवा करें। अपने पूरे जीवन में मैं समाज सेवक रही हूँ और आज भी समाजवादी हूँ। जो भी कार्य मैंने किए, आप कह सकते हैं कि चुपके–चुपके किए, परन्तु कुछ लोग इसके विषय में जानते थे। ये सब कार्य करने आवश्यक थे और व्यवहारिक रूप से अब ये सभी स्थान समर्पण के लिए तैयार हैं। आरम्भ में इनके समर्पण न किए जाने का कारण ये था कि मैं देखना चाहती थी कि ईमानदार लोग हों जो ईमानदारी से कार्य को कर सकें। आज तो सामाजिक कार्य के नाम पर लोग अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं। यही कारण है कि मैंने इतने दिनों तक प्रतीक्षा की। यद्यपि गणपति पुले, हस्पताल, धर्मशाला स्कूल जैसे बहुत से स्थान तो मैं समर्पण कर चुकी हूँ परन्तु अब मैं कई अन्य स्थान भी भेंट करना चाहती हूँ। मै नहीं जानती थी कि काना–जोहरी में जो भूमि इन्होंने खरीदी है वह भी मेरे नाम में है। इसके विषय में जब मैंने सुना तो मैं बहुत हैरान

हुई! इससे कोई आय नहीं होती। वहीं का वहीं मैंने निर्णय किया कि यह भूमि अमरीका के लाइफ–इटरनल–ट्रस्ट की सामूहिकता को दे दी जाए।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि चीज़ें कार्यान्वित हों परन्तु सहज के अनुसार बिना गणपति के, बिना पृथ्वी माँ के यदि आप कार्य आरम्भ करें तो कार्यान्वित नहीं होता। इटली में भी मेरे पास बहुत अच्छी भूमि और एक घर है जिसे मैं सहजयोग को भेंट करना चाहती हूँ। इसके अतिरिक्त डालियों नामक स्थान भी मैं इटली की सामूहिकता को देना चाहती हूँ। इटली के सहजयोगियों को मैंने बहुत अच्छा ईमानदार व समर्पित पाया है। मैं जानती हूँ कि वे इनका दुरुपयोग नहीं करेंगे। इसी प्रकार से भिन्न स्थानों पर मैंने कोई भूमि खरीदी है या कोई इमारत बनाई है तो वह सब मैं सहजयोग को भेंट करना चाहूंगी। परन्तु इससे पूर्व मैं देखना चाहूंगी कि ईमानदारी पूर्वक कार्य हो रहा है या नहीं। अतः आप लोगों को इनमें रूचि लेनी चाहिए। ये जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि अनाथालय शुरु करने के लिए एक सहजयोगिनी अमरीका गई। ये बहुत अच्छा विचार है। अनाथ बच्चों के विषय में सोचें। निराश्रित महिलाओं के विषय में सोचें। उन लोगों के विषय में सोचें जो कैंसर आदि भयानक रोगों से पीड़ित हैं और जिन्हें हम ठीक कर सकते हैं। इसलिए मैंने एक हस्पताल आरम्भ किया है अब दिल्ली में भी मैं एक हस्पताल शुरू करने वाली हूँ। एक और खुशखबरी है कि मैंने हिमालय की तलहटियों में एक बहुत बड़ी भूमि खरीदी है। मेरे विचार से 55 या 56 एकड़ भूमि। इसके अतिरिक्त एक और भूमि मैंने खरीदी है जहाँ पर आप खेतीकर सकते हैं या जहाँ आप दुर्लभ जड़ी–बूटियाँ उगा सकते हैं जिनसे रोगपीड़ित दुखी लोगों के लिए सस्ते दामों पर दवाइयाँ बनाई जा सकें। बहुत सी परियोजनाएं आरम्भ हुई और वो सब आगे बढ़ रही हैं। परन्तु समस्या ये है कि सहजयोगी गोष्ठियों के अतिरिक्त इन कार्यों के लिए धन भेंट नहीं करते। गोष्ठियों में दिए गए धन से ही ये सभी कार्य किए जा रहे हैं। बाकी के खर्चे मेरी पुस्तकों तथा अन्य चीज़ों से आए धन से चलाए जाते हैं। अतः ये बात समझ लेना आपके लिए अत्यन्त आवश्यक है कि गोष्ठियों में जो भी पैसा आप देते है उसका पूरा उपयोग मानवता के हित में होता है। चाहे वो लोग सहजयोग में न आते हों फिर भी सहजयोगियों के माध्यम से वे लाभान्वित हो सकते हैं।

अतः मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि कंजूस न बने। चाहे आप मुझे धन न दें

परन्तु आपमें कृपण (कंजूस) स्वभाव नहीं होना चाहिए क्योंकि उस धन का क्या लाभ है, जिससे कोई हित नहीं होता? अतः आप सब दान करना सीखें, मुझे नहीं परन्तु उस नई परियोजना के लिए, उस नई संस्था के लिए जो ये लोग बनाना चाहते है। ठीक है। एक बार जब मुझे ये संस्था चलाने के लिए उपयुक्त लोग मिल जाएंगे तो मुझे ये संस्था बनाने में कोई एतराज़ न होगा। मैं वैसा कोई कार्य नहीं करना चाहती जैसा बाकी के मूर्ख लोग कर रहें हैं। इसलिए मैं आप सबसे निवेदन करती हूँ कि थोड़े से उदार हो जाएं। ये उदारता हमारे विश्व के सामाजिक पहलू के प्रति होनी चाहिए। इसके लिए ध्यान दिया जाना महत्वपूर्ण है। मुझे आशा है कि आप इस बात को समझ गए हैं कि मैंने मार्ग नहीं बदला, यह वही मार्ग है जो अब सहजता से चला जा रहा है। पहले हमें बाधाओं से पूर्ण पर्वत चढ़ना पड़ा अब हम एक ऐसे स्थान पर आ गए हैं जहाँ हम सब समझते हैं। **इसी सूझबूझ के साथ मैं आपको बताना चाहती हूँ, कि अपने पास कुछ धन एकत्र करें जिसे आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्य को करने के लिए दान कर सकें।** ये कार्य कुण्डलिनी जागृति का नहीं होगा लेकिन इससे कुण्डलिनी जागृति भी की जा सकती हैं। **हमें कुण्डलिनी जागृति के परिणाम दिखाने होंगे कुण्डलिनी जागृति केवल आपके लिए, केवल आप सहजयोगियों के लिए ही नहीं है। ये पूरे विश्व के लिए हैं।** ये मेरा स्वप्न है और इस स्वप्न के अनुसार मैं अपना कार्य करती जा रही हूँ और अब, जैसा आप सब जानते है मैं ये जिम्मेदारी आप सब पर छोड़ती हूँ।

मुझे आशा है कि अब आप लोग समझेंगे कि अपनी समस्याओं तथा अपने अनावश्यक प्रश्नों की अपेक्षा अन्य चीज़ों के विषय में सोचना चाहिए। हर समय मैं देखती हूँ कि अगुआ लोग भी कोई न कोई तुच्छ समस्या लेकर आ जाएगे। कोई यदि बीमार है तो यह बात मुझे बताने की कोई आवश्यकता नहीं। क्यों नहीं आप उसे ठीक कर सकते, क्यों ये समस्या मेरे तक लाना आवश्यक है? अगुआ गणों में ये आम बात है। अतः मेरा अनुरोध है कि ऐसी कोई समस्या लेकर न आऐं। अपनी समस्याओं का खुद समाधान करें, अपनी समस्याओं को खुद सुलझाएं। एक बार जब आप अपनी समस्याएं सुलझाते हैं तो, आप हैरान होंगे, आप जान जाएंगे कि आपको कौन सी शक्तियाँ प्राप्त हो गई हैं। परन्तु हर बात मुझसे पूछना आवश्यक नहीं। ऐसी समस्याओं के लिए मुझसे पूछना अनावश्यक है क्योंकि मेरे पास करने के लिए और भी बहुत से कार्य हैं। यदि हर बात में मुझसे पूछेंगे, कुछ भी

घटित होगा तो मुझसे आदेश मांगेगे तो यदि कुछ घटित हो गया तो मुझसे पूछने के पश्चात् भी आप लोग कहेंगे फलां व्यक्ति को कैंसर है, फलां व्यक्ति बीमार है आदि–आदि। मैं आपको कहना नहीं चाहती परन्तु उस व्यक्ति में अवश्य कोई गलती रही होगी। किसी के विषय में भी मैं ऐसा कुछ बताना नहीं चाहती परन्तु अवश्य कोई कारण रहा होगा कि वह व्यक्ति बीमार है या उसके साथ कुछ अनहोनी हो गई है। प्रायः सहजयोग, सहजयोग ध्यान धारणा सहायक होनी चाहिए। इसे कार्य करना चाहिए। बहुत से लोगों पर ये कार्यान्वित हुई। कुछ लोग जो बहुत बीमार थे एक बार कबैला आए। मैं वहाँ नहीं थी फिर भी वो ठीक हो गए। **अतः व्यक्ति के अन्दर की श्रद्धा इतनी दृढ़ होनी चाहिए कि यह कार्य करे।** कुछ लोगों में मुझे परेशान करने की आदत है। वो हर समय यही करते रहेंगे कि वो ठीक नहीं है, ये ठीक नहीं है। मेरे केन्द्र पर ऐसा हो रहा है, वैसा हो रहा है। क्यों नहीं आप अपनी समस्याओं को सुलझा सकते? आप सब मिलकर क्यों नहीं सुलझा सकते? **आपकी अत्यन्त कृपा होगी गर आप समझ लें कि आप सब ये समस्याएं सुलझा सकते है। मेरा साक्षात् वहाँ होना आवश्यक नहीं है। मैं हर समय आपके साथ हूँ। सदैव आपमें समाई हुई हूँ।** अतः जो चीज़ें आपके नियंत्रण में हैं उनके लिए मेरे पास आना आवश्यक नहीं है। यदि ऐसा नहीं कर सकते तो अपना तथाकथित अगुआ पद त्याग दें क्योंकि अगुआ होने का अर्थ ये है कि आपमें सहजयोग को कार्यान्वित करने की योग्यता होनी चाहिए। आपमें शक्तियाँ हैं, आप ये कार्य कर सकते हैं, आप सभी ये कार्य कर सकते हैं। इसके लिए हर समय आपको मेरे पास आना आवश्यक नहीं है। मुझे बहुत से कार्य करने है, बहुत सी चीज़ें कार्यान्वित करनी हैं और इन कार्यों को मैं निरन्तर कर रही हूँ। आपको चाहिए कि अपनी, अपने देश की, अपने क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करें। परन्तु यदि आप पूर्णतः उन्नत नहीं है तो, मैंने देखा है, आप कहेंगे श्री माताजी ये कैसे करें? ये कोई तरीका नहीं है। आपको स्वयं ये सब करना चाहिए। आपको देखना चाहिए कि आप किस प्रकार ये कार्य कर सकते हैं, किस प्रकार इसमें सहायता कर सकते हैं और किस प्रकार अन्य लोगों की सहायता कर सकते है।

हम लोग यहाँ पर केवल उन लोगों की देखभाल करने के लिए नहीं हैं जो सहजयोग के लिए बेकार हैं। मैंने देखा है लोग अत्यन्त महत्वाकांक्षी होते हैं और शासन करने का प्रयत्न करते हैं। अतः बार–बार मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि

चाहे आप अगुआ ही क्यों न हो कृपा करके न तो मुझे टेलिफोन करें और न हीं मुझे पत्र लिखें। रोज़ मेरे पास इतने सारे कागज, लिफाफे इक्ट्ठे हो जाते हैं, मेरी समझ में नहीं आता कि इनका क्या करूं? किस प्रकार आपको बताऊं कि मुझे पत्र लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप यदि समस्या का समाधान नहीं कर सकते तो बस समाप्त। कोई ऐसा कार्य ले लें जिसे आप कर सकें। किसी भी कठिन कार्य में, जिसे आप कर नहीं सकते हाथ न डालें। यही विवेक है। आपमें यदि विवेक है तो सामूहिक रूप से अपने अगुआ के साथ मिलकर अपनी समस्या का समाधान कर लें और अगुआ यदि विवेकशील हैं तो कभी भी मुझे आप कष्ट नहीं देंगे। मैं आपको कुछ लोगों के विषय में बता सकती हूँ जो अगुआ हैं फिर भी उन्होंने मुझे कभी नहीं कहा कि ये गड़बड़ है, वो गड़बड़ है। अपनी सारी समस्याएं उन्होंने पूरी तरह से सुलझा लीं। यही लोग आपके आदर्श होने चाहिएं और उन्हीं की तरह से आपको भी कार्य करने चाहिए। ऐसा करना आपकी माँ के लिए आनन्ददायी होगा क्योंकि अब आपको बना दिया गया है। आप ही लोग हैं जिनमें शक्तियाँ हैं। अपनी शक्तियों का एहसास करें, अपनी शक्तियों को समझें, अपनी जिम्मेदारी को समझें और आप हैरान होंगे कि किस प्रकार चीजें कार्यान्वित होती हैं! दिवाली के इस अवसर पर मैं बार–बार आपकी मंगल कामना करती हूँ और नववर्ष में तथा जीवन पर्यन्त आपके लिए समृद्ध जीवन की कामना करती हूँ।

परमात्मा आपको धन्य करें।

आपका हार्दिक धन्यवाद।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की कृपा से तिहाड़ जेल में सहज प्रकाश

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की कृपा श्री बी.आर. रावल के प्रयत्नों तथा तिहाड़ जेल के तत्कालीन डी.जी. के सहयोग से 7 फरवरी 1998 को तिहाड़ जेल के कैदियों तथा कर्मचारियों के हित के लिए वहाँ सहजयोग कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। सभागार में एक सहजयोगी सभी अफसरों को सहजयोग बता रहा था। सभी अफसरों के जूते सभागार से बाहर पड़े हुए थे और कांस्टेबल श्री राजीव सिंह को जूतों की देख रेख का कार्य सौंपा गया था। परन्तु उसका ध्यान वक्ता की ओर चला गया और इतने में ही डी.जी. के जूते वहाँ से किसी ने उठा लिए। बेचारा कांस्टेबल बहुत परेशान हुआ क्योंकि कार्य पर इस लापरवाही के कारण इतना बड़ा अफसर उसे कठोर दण्ड दे सकता था। फिर भी कुछ सहजयोगियों ने उसे विश्वास दिलाया कि परमेश्वरी माँ उसकी रक्षा करेंगी और कुछ भी न होगा। कार्यक्रम समाप्त होने पर डी.जी. बाहर आया और उसे जूतों के बारे में बताया गया। परन्तु जब डी. जी. ने शान्ति पूर्वक बाजार से एक नई जोड़ी चप्पलों की खरीदने की आज्ञा दी तो उस कांस्टेबल की हैरानी की सीमा न रही। इस घटना ने आदिशक्ति में उसकी श्रद्धा को दृढ किया और उसके पश्चात् वह सच्चा सहजयोगी बन गया। ये कांस्टेबल माइग्रेन रोगी था परन्तु आत्म साक्षात्कार के तुरन्त पश्चात् चमत्कारिक रूप से उसका रोग शमन हो गया। अब सभी सहजयोग कार्यक्रमों में वह सबसे आगे होता है। तिहाड की (जेल न. 1 से 5 तक) सभी जेलों में तथा कर्मचारियों के रिहायशी क्षेत्र में सहजयोग के कार्यक्रम किए गए। अब जेल के महिला एवं पुरुष सहजयोगी तथा कर्मचारीगण नियमित रूप से ध्यान धारणा करके परम चैतन्य का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। जेल न. 5 के सुपरिन्टेंडेट श्री अजय कुमार और डिप्टी सुपरिंटेंडेट श्री दलजीत सिंह ने बहुत सहयोग दिया। उन्होंने सहजयोग ध्यान धारणा के लिए जेल के प्रशासन ब्लॉक में एक बहुत बडा कमरा सहजयोग ध्यान धारणा के लिए दिलवाया।

मई 1998 में 16 से 21 वर्ष की आयु के युवा कैदियों को आत्मसाक्षात्कार के लिए

ध्यान कक्ष में भेजा गया। सभी ने परम चैतन्य के आशीर्वाद को अपने रोम–रोम पर अनुभव किया। उनमें से 10 युवा बहुत नियमित हो गए और जब तक जेल में रहे सहजयोग के सभी कार्यक्रमों में भाग लिया।

तब से तिहाड़ की लगभग सभी जेलों में सहजयोग के कार्यक्रम चल रहे हैं और क्रूर अपराधी भी इसका लाभ उठा रहे हैं। दिल्ली सहजयोग केन्द्र ने जेल पुस्तकालय को सहजयोग परिचय पुस्तिकाएं और चैतन्य लहरी के सजिल्द संस्करण दान किए। साधक कैदी नियमित रूप से ध्यान धारणा करके, आन्तरिक शन्ति, अच्छा स्वास्थ्य और परमेश्वरी आशीर्वाद को प्राप्त कर रहे है। कुछ कैदियों ने हमें पत्र लिखे, जिनमें उन्होंने अपने अनुभव तथा सहजयोग से हुए लाभ के विषय में लिखा। इनमें से चार पत्र नीचे छापे जा रहे है।

डा. नरेन्द्र गुप्ता, श्री इलम सिंह बंसल, कर्नल दत्त तथा अन्य गहन सहजयोगियों की एक टीम वहाँ के कैदियों के लिए नियमित रूप से ध्यान धारणा की व्यवस्था कर रही है। इन क्रूर अपराधियों के आन्तरिक परिवर्तन की सेवाओं को मान्यता देते हुए जेल अधिकारियों ने उन्हें 30 नवंबर 2000 को मान्यता प्रमाण–पत्र प्रदान किए। डी.जी. ने डा. नरेन्द्र गुप्ता को शाल पहनाकर सम्मानित किया। हम अपनी परमेश्वरी माँ से प्रार्थना करते हैं कि उनका प्रकाश सहजयोगियों का मार्ग प्रशस्त करता रहे और वे प्रेम, शान्ति एवं आनन्द का साम्राज्य पृथ्वी पर स्थापित कर सकें और उनके दिव्य उपकरण बन जाएं।

Yogendra Kumar
s/o Sh. Gyan Chand Upadhyay,
U/S 302

मैं जेल में लगभग दो वर्ष (जब से जेल में 'सहजयोग' प्रारम्भ हुआ है) से नियमित रूप से 'सहजयोग' कर रहा हूँ। मुझे इससे क्या क्या फायदे हुए है अब तक यह तो गिनती कर पाना मुमकिन नही है। लेकिन जो भी याद हैं वो इस प्रकार है: महोदय 'सहजयोग' से मेरा मन शांत है। मुझे समाधान (संतोष करना) आ गया है। कभी किसी वस्तु पर मन नहीं चिपकता, जो जैसा भी हो रहा है ठीक है। अगर कोई बात गलत होती है या समाज के लाभ के लिए नहीं होती है तो वो समस्या भी मैं ध्यान के समय में श्री माताजी निर्मला देवी जी के फोटो के आगे बैठकर वो समस्या दोहरा लेता हूँ, की आपसे विनती है कि कृपया आप ही हम लोगों के लिए कुछ करें और फिर सब ठीक हो जाता है। इसमें जो कार्य सबके लाभ के लिए होता है वो अति शीघ्र पूरा हो जाता है। जो कार्य केवल अपने लाभ के लिए होता है उस कार्य में थोड़ा सा समय लगता है। मैं पूर्ण रूप से 'सहजयोग' पर ही आधारित हूँ। जब तक मैं सुबह शाम सहजयोग नहीं कर लेता तब तक ऐसा महसूस होता है जैसे मेरा कुछ खो गया है। और 'सहजयोग'

में बैठने के बाद सब ठीक हो जाता है। मैं शारीरिक और मानसिक रूप से पूर्ण सन्तुष्ट हूँ। और अब जेल न. 5 के कैदियों को 'सहजयोग' करने में मदद करता हूँ। महोदय हम सभी 'सहजयोगियों' का 'सहजयोग' करने में सहायता और उचित प्रबंध करने का कष्ट करें।

धन्यवाद,

सहज योग महायोग

आरिफ

गुरु जी आपका सहजयोग मुझे बहुत अच्छा लगा। दिल से करे तो यह सहजयोग ऐसा महायोग है जो हर किसी की समझ में नहीं आता। हर देवी माँ होती है और माँ से मागेंगें तो इससे अच्छा क्या है और दूसरी बात है हमारा जो ध्यान इधर–उधर भटकता था अब थोड़ा बहुत अच्छा हो गया है। यह हकीकत बात है सहजयोग अपने सही मन से करें और उसका ध्यान स्थिर रखते हुए करें। इधर–उधर भटकने ना दें तो कामयाब हो सकता है और दूसरी बात है आपका जो ये सहजयोग है इसमें आप अगर ध्यान लगाकर बैठें तो जिन्दगी में आप हर चीज देख सकते हैं।

फिरोज

पिता का नाम श्री जलील अन्सारी

U/S 454, 380, 411

(मुस्लिम)

सहज योग करने से हमें मन का शांति मिली है और मन अपने आप को सब कुछ महसूस हुआ। जो भी मन में सोचा था वह भी पूरा हुआ है और जो भी मांगा वह भी हमें मिला है।

जय श्री माता जी

सहजयोग एक महायोग

कृष्ण (सन्नी) S/o हवा सिंह

FIR No. 14/99, U.S. -307,

P.S- प्रशान्त विहार

मेरा नाम कृष्ण S/o हवा सिंह है। मुझे सहजयोग बैरक में सहजयोग करते हुए एक महीना हुआ है। मैं सहजयोग करके बहुत खुश हूँ। सहजयोग करने से मुझे अनेक लाभ हुऐ हैं। उनमें से कुछ लाभ मैं लिख रहा हूँ।

1. सहजयोग करने से मुझे व मेरी आत्मा को बहुत शान्ति मिली है। एक अन्दरुनी खुशी मुझे महसूस हुई है।

2. सहजयोग करने से पहले मेरे अन्दर चिड़चिड़ा स्वभाव था जो अब नहीं है।

3. सहजयोग करने से पहले मुझे गुस्सा बहुत आता था, लेकिन अब मैं अपने गुस्से पर सरलता से काबू पा लेता हूँ।

4. सहजयोग करने से पहले मेरा शरीर बहुत आलसी और दर्द करता था लेकिन अब नहीं होता।

5. सहजयोग करने से पहले मेरे केस (case)में कोई कारवाई नहीं हो रही थी लेकिन अब मेरे केस गवाईयाँ चल पड़ी हैं। सहजयोग करने से पहले मेरे गवाह नहीं आ रहे थे लेकिन अब गवाह आने लगे हैं।

जय श्री माता जी